MSS No. 342 Subject Philosophy

Name of MSS वाक्य सुधा

Author शंकराचार्य

Period ______ Folios 65

Script Devnagiri Source Prithipal Singh

Missing Folios NL


25
20
No 1
342

वाक्य सुधा सटीक ; शंकराचार्यकृत
एकादशी, १० ज्येष्ठ वदि, १८८४ वि० लि०
९६ पत्रक ॥ ल० अ० १० पं० प्र० पृ०

ह० ल०

वँदे नँद नँदनँ देवँ।

वँदे रामँ रादेवँ।

श्री राधा श्रीधारा श्री।

---

१ ॐ

१ मांडूक २ मुंडक ३ प्रश्न ४ बृहदारण्य
५ छंदोग ६ तैतरी ७ ऐतरय ८ कठवली
९ केन १० ईषावास

A-no. 342

008

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ वाक्यसुधा ॥ ॐ
नमो रामाय देवाय सच्चिदानंदमूर्तये
ये कृष्णाय गुरवे व्यासशंकराचार्य
मूर्तये ॥१॥ भो शिष्य नामरूपात्मक जो य
ह सर्व प्रपंच नाम पंक आत्म विषे लगा होया दृष्टि
आवता है ॥ सो वाक्यसुधा करि दूर करके
निष्कलंक जो तत्त्व है सो तुम देखो ॥१॥ पद
पदार्थ ज्ञान जो है सो वाक्यार्थ ज्ञान का कारण है इसीसे
नियम ते आदि विषे पदार्थ ज्ञान निमित्त पद
कहे है ॥२॥ तत्त्वमसि इत्यादिक जो वाक्य है सो
प्रत्यक् ब्रह्मैक्य बोधक है ॥ इहां त्वंपद का अर्थ

1 ग्रन्थगात्माहै॥ अरु तत्वं इ कोअर्थ यहै अरु
है॥ ४ वाक्य सुधानामग्रंथ कर्त्ताको आरंभक
रताहुवाजोमगवानू भाष्यकार हैं तहां आदि
विषेतत्वंपदकेअर्थकोस्पष्टकरहैं॥ रूपं इ
त्यादि पंचश्लोकोंकरके॥ तहां आदि
विषेस्थितयहवस्तुसंग्रहश्लोक कहै॥
॥ श्लोकः॥ रूपं दृश्यं लोचनं दृक्
तद्दृश्यं दृक्तु मानसम्। दृश्या धी
वृत्तयः साक्षी दृगेव न तु दृश्यते
॥१॥ टी॥ रूपजोनीलपीतादिकहैजासोदृ
सोदृश्यहै॥ अर्थयहलोचनवृत्तिव्याप्यहै

कौन है वह द्रष्टा जिसके से स्वरूप व्यापीयत है॥ इनमें येक
विवेक करते हैं॥ लोचने घोरते॥ लोचन जो नेत्र ई वृहै सोई द्रष्टा
यह अविचारदित है॥ इसमें सो त्रिगुन आत्मा है और देह
जो या आत्मा है इत्यादि आरति प्राकृतों विवेक जो प्रत्यक्ष ही है॥
आत्म दृष्टि बाह्य विषयादि भिन्न रविष्ठा है सोई स्वप्ना
र के [illegible] इसी से देह आत्म बुद्धि नि बोधक नेकैने वो के अ
री गई जाते देह में बाह्य विषय वर्तई चुयरद वे के अ
यगया है॥ अब लोचने ईय प्रसक आत्म नेकूल
दृष्टि को हरकरते हैं॥ तद्रूपं द्रष्टमानसं यत भावते॥ १
सो जो लोचन रूपको अपेक्षा से द्रष्टा है
सो कहत है सो भी द्रश्य होहै न है द्रष्टा॥ जाते ति
सको भी मान सजो अंतःकरण संवर्तते है सो
द्रष्टा है॥ अर्थ यह है तिसलोचन केसद्भाव

कासाधक है॥ मनके व्यापारवान संतिनो
चनकोसज्ञाव अरस्तपरविषेजो प्रवृत्ति हैति
नद्रोनोंके निक्षयतें॥ अरतिस मनके
अ:कोसंतिसुषुप्ति हिकों विषेतिनदो
नोंके अनेक्षयते॥ तद मनहीं प्रत्यगात्मा
होयांइस प्राविहुई दृष्टिको अभिवारण
करतेहैं॥ इसरूपाधीवतनयाइसउतराधं
करके॥ ईहां धीवृत्ति शब्दकरके पूर्वोक्त
अंत:करण अरतवृत्तीकरयेतेहैं॥ सो
धीवृत्तीरूप है अर्थ यह विषयताहैं॥ तिन
कोंकासाक्षीचिदात्मा द्रष्टा है॥ अर्थयह

पूर्व कहै है जो चक्षु आदि अंतःकरण का द्रष्टा है तिन्हों के
जैसे युक्ति करके [illegible] अनुल सिद्ध होता है ॥ तैसे आत्मा के द्रष्
ष्टा का नहीं कहै ॥ और रचौर अपे दो मन नगर पो इस
अनुभवते ॥ मैं और स्थान रवे से है मन तिस
का ऐसा व्याख्या भया द्रष्टा तिन दे रवगो भया ॥
त्या रहे श्रुति ने मन के भी द्रष्टा पर आधान
सिद्ध कहै है तिस पद भया ॥ तिस मन का जो द्रष्टा सो
आत्मा है सो द्रष्टा ही है ॥ एव शं रहे एह जर्ण वना
है जो आत्मा द्रष्टा नहीं ॥ तत्र द्रष्टा ते इस हेतु
कसे तिस आत्मा के भी द्रष्टा पन मानि तें युक्ति
के अनवस्था प्रसंग की प्राप्ति होती है ॥ अ
नवस्था संतै भी अंत को जाय करस्वतः सि
द्ध वस्तु के अंगीकार से तैं जगदांध्य प्रस

त्वं कहता है जो ऐसे युक्ति नहीं माने तिन युक्ति के अनवस्था प्रसंग होता है ॥ ८

गकी प्राप्ति होती है॥ भाव यह जाने वरंव
रा कर के दृष्टा अरदरूपका ढूंढना तबलग
है जबलग स्वप्रकाश भाव स्वपरानुपेह
स्वरूप की स्थिति नहीं॥ ताते सो साक्षी दृष्टा ही
है वही और रका दृढरूपरति॥ इसी को कहते हैं॥
जिस आत्मा भाव ना जिस इंद्रियादिक की
दृष्टता नहीं स्थिति होती॥ सो आत्मा एक ही
अविवेक उपासक जैसे स्वरूप भूत प्रका
श स्वरूप पर्यंत सकल का दृष्टा है॥ मन
अरु चक्षु दृष्टा नहीं॥ इन दोनों विषे सा
क्षी चैतन्य के प्रवेश संति जो दृष्टत्व है सो

उपचार कहै॥ जैसे अग्नि के प्रवेश सैं तें

उर कश्रलोहादिकं दग्धत्व उपचार क

है॥ तैसी तैं मनादिरूपपर्यंत सकल दृश्य

होहै॥ ऐसे निश्चय कर के तिन सब सें

विवेक रूप भाव कर के प्रथम स्वपर विल

क्षण आत्मा कूं सर्व त्याग स्वरूप अपना

आप है॥ ऐसे जानि संवीत रहो॥ स

श्रुति सेप्र काशित माया तत्कार्य

सं प र्कशून्य तिस कूं मन ही प्रका

श रूप है तौ बिना लेद तिस रूप म।

लो का पः॥ १॥ श्री॥ ओं॥

जैसे कं ह मालादि पर स्पर व्यभिचारी हैं अथवा
पूर्वको करि बिषे संक्षेप करजो कहा है तिस
को बिस्तार कर कहते हैं यो ॥ २ ॥ श्लोक पर स्पर
व्यभिचार तें ॥ अर तिन व्यभिचारीयों कें कि
सी एक अधिष्टान विषे सर्पधार दंड मा
लादि वत् कल्पित तन तें यम तें अरु दृष्टा स्व
प के सर्व दृश्यों विषे रज्जु खंड वत् अन्वय तें
॥ अरु तिस दृष्टा के कल्पित तत्व व्यापित तें ॥
इस प्रकार अन्वय व्यतिरेक विचार करके
दृष्टा जो अद्वैत आत्मा है तिसके सिद्ध प्रका
र को कहते हैं । नीलपीत स्थूल सूक्ष्म ह्रस्व
स्व दीर्घादि भेदतः नानाविधानि रूपा

लि पदरूप लोचन मे कथा ॥ २१ ॥

टी०॥ आदि पद तें चक्र अरु वर्तुलादिक को काग
हरा है॥ नील पीत स्थूल सूक्ष्म ह्रस्व दीर्घादि भे
द सें नाना विध है रूप॥ अर्थ यह व्यभिचा
री हैं॥ तिन्हों का द्रष्टा जो लोचन है सो एक है
॥ अर्थ यह अव्यभिचारी है॥ कहे रूप के
सत्व विषे लोचन तें और प्रमाण नहीं॥ का
हे तें जो लोचन के प्रसारणादि व्यापार विषे रूप
की प्रतीति है॥ अरु लोचन के मूंदणादि व्यापार वि
षे तिस रूप की अप्रतीति है॥ जो कहे प्रत्यभि
ज्ञा कर के भी आकाश के सत्व का ग्रहण होता है॥ तो
रूप

रूप को लोचन ही देखता है

ऐसे नहीं॥ काहेतें जो तैस प्राकृसत्वकार
हता अनसिद्ध है॥ तिस को दिखावते हैं।
जैसे शुक्ति का देखि रजत आरोपित है॥
कथं आरोपितस्मित्ते चेतन्या हा॥ एह रजत
ईहां है ऐसे चिर काल अपवा अचिर का
ल पर्यंत अनुभव कर के॥ रतिसु रजत के
बाधो दैतें पूर्व ही पदार्थांतरेको देख कर
पुनः रति सही शुक्ति का विबेलोचन को
विस्तारता है या नहीं निवृत्तसकृ है बरले
स का ऐसा जो कोई एक पुरुष है सो एह र
जत है इस प्रकार प्रत्यभिज्ञा करता है॥

स्थान

ता

सो एह प्रत्यभिज्ञा तहं प्रमाणों को नहीं

पावती।। काहेतें जो आरोपित प्रतीति मात्र

शरीर है।। तैसेही अधिष्ठान तत्व के भी

क्षय पर्यंत दृष्टि भेज की जो बाधा है ति

सके अरने क्षयतें।। पूर्वद दृष्टि विषय के

सदृश विषय रवि भेदांतरंतर के उदै

संते प्रत्यभिज्ञा भ्रम है।। जे कहे क्षेत्वे

संते बौधमत की भ्रांति होती है।। तो नहीं का

हेतें जो हमारे मत विषें दृश्य दर्शन के क्षण

कत्व का अंगीकार है।। अरने त्य अरवंड

एक सर्व भासक चेतन स्वरूप चिदेक

6

रस आत्मा के अंगीकार है॥ हमारे मत वि
षै काई एक दोष कला नहीं॥ इहां पूर्वोक्त
युक्ति विचार करनो योग्य है॥ इति द्वितीय
श्लोकार्थः॥ बहुरि जो दृश्य है स्फुरत्तिमात्रतें
द्रष्टाभाव कासे उधार करस्यों जो एक लोच
न है तिसके भी नहीं निर्ये तत्तद्रष्टृत्व अर्थात्
यह नेत्रों के स्वतः द्रष्टाभाव नहीं॥ काहे
तें जो तिस लोचन के भी एकरूपत्व का व्य
भिचार है॥ इसी तें लोचन भी दृश्य ही है॥
जातें ऐसे है तातें सो लोचन हं स्वद्रष्टा
जो मन है तिसतें बाह्य नहीं॥ अर्थ यह तिस
रवि नाल सिद्ध नहीं॥ सोई सिद्ध करते हैं स्वा

निर्युक्त के अनवस्थाप्रसंग
तैसे जगत के आंधप्रसंग

अर्थमहरूपतोविकारन्चकाआपइन्हा
तोवराअयोग्यहैइसहेतुतें॥८

॥स्योध्यमाद्यपटुतेषुनेत्रंधर्मेषु
नेकतः संकलयन्मनःश्रोत्र
तृणादौयोज्यतामिति॥९॥

टी॥यद्यपिएकपुरुषविषेएकहीनेत्र
है॥तथापिसोनेत्रएकरूपनहीं॥काहेतें
जोसोनेत्रआंध्यमांद्यचंचलादिअवस्था
भेदसेविकारीहै॥अरतिसविकारीने
त्रकेसर्वविकारदृष्टत्वकेअयोग्यतेंअप
रकासेदृश्यत्वअवश्यप्राप्तभया॥यद्यवि
कवत्प्रवृत्ति॥अर्थयहनेत्रांविषेव्यभिचार
प्राप्तभया॥तिसलोचनकाजोदृष्टाहैसो
कौनहैइसढूंढताविषेअंतःकरणतिनके

इच्छा भावकसत्रांतें हो ताहै इसीको
कहते हैं॥ संकल्पयन्मनः इसकरि
के बहुत अध्यमां घुँजो नेत्र धर्म हैं तिन्हौं विषै वि
मान संतैं मैं अंधाहूं मैं मंदहूं मैं ए
दुनेत्र हूं इसप्रकार अनेक प्रकारों क
सकल प्रकार कल्पता होया जो मन ति
नः करि हैं सो व्यभिचारी जो नेत्र हैं तिस
की अवस्था उं विषे व्यभिचार ता
सेइ च्छारूप है॥ इसप्रकार योजना है॥
एक स्थान विषे निर्णय कीया जो शास्त्रा
र्थ है सो और स्थान विषे जोडबे योग्य
है॥ इसन्यायकरने नेत्रेंद्रियों विषे जोडक

न्याय है सो औरै इंद्रियें विषै वेपुरुष जोड़े॥ इ

सो को अब कहते हैं॥ श्रोत्र त्वगादि है पांच ता

भिन्न॥ रूपेंद्रिय विषे कहा जो न्याय है सो न्याय

रूपेंद्रिय रूप इंद्रिय कों विषे जोडने योग्य है॥ ने

त्रेंद्रिय विषे कहा जो न्याय है सो श्रोत्र त्वगादि

कों विषे जोडने योग्य है इत्यर्थः॥ अब चक्षु

रादि कों को न्यांई मनकें रूप कहत हैं सत्व

कों सिद्ध करते हैं॥ कामः संकल्पसंदेहो

श्रद्धाश्रद्धे धृतीतरे ह्रीर्धीर्भी रित्ये

वमादीन्मासयत्येक धा चिति: ४०

टी०॥ एवमादीन् इत्यादि विषे जो आदि पद है

तिस ते क्रोध लोभ मोहादि कों ग्रहण है॥ काम

४ संकल्प संदेह अध्यात्म अध्यार्थ अरह
तरकहीयेअध्यर्यैलज्जाबुद्धिभयइत्यादि
जोअनेकविधअंतःकर्णहैइसकोचैतन्य
प्रकाशताहै॥सोचैतन्यएकहीहै॥तिसचै
तन्यकेनअवस्यांतरकोनधर्मांतरसंभाकी
वनाहेवैहै॥तहांप्रमाणभावहैइत्यर्थः॥
६॥मनआदिसंपूर्णअंतःकर्णकी
जोअवस्थाहैतिन्होंकासाक्षीरूपजोचै
तन्यहैतिसकेअविकारीभावकोसि
द्धकरतेहोयेतिसचैतन्यकेएकरूपता
कोअरस्यचकिअविभारसिकभावक
सेसर्वत्रअव्यभिचारीहेतुकरकेअहै

नीयत्वकोहूं सिद्धकरतेहैं॥ श्लोक॥
नोदेति नास्तमेत्येषा नवृद्धिं याति न
क्षयम्॥ स्वयं तथा विधा न्यांनि ना
सयेत्साधनं विना ५ टी०॥ येजोचे
तन्य है सर्वके साक्षीरूप भावकरे
सर्वविषेप्रकाशहोयाहै नहोउत्पनहै
होता॥ अरननाशकोप्राप्तहोताहै
॥ अप्रगटकाजोप्रगटहोनाहैतिस
कानामजन्महै॥ अरविद्यमानकी
जोअविद्यमानताहैतिसकानाम
विनाशहै॥ एहाहैंस्वरूपजेजोंके
तैसेजोआदिअंतवैविकारहैं॥

१

त्तिक्रोधसेरहैतेहैचेतनयरहकेल

॥अथयंतरविकारकेनिराकरणते

मध्यविषेरहयेजोवधारहिविकार

हैंसोअपर्तेवर्धदिपरिनिरस्तकरैहै

तथापिरनिर्यत्नज्ञानमुषकरसे

निषेधकरतेहै॥नवृध्दियातिमित्या

हिकरसोवृधनामउपचयकाहै॥अ

रक्षयनामअपचयकाहै॥अर्थ

यहसावैवजोकुटताहिहैसोअव

यवैकीउपचयतेवृधहोवैहै॥अ

रअवयवोकेअपचयतेहीनहो

जो अवयवों होता है सो बढ़ना घटना है - अवयवों के बढ़ने से घटना है - चेतन अवयव नहीं।

अरयहजो तिसविषे अर

वैहै॥ चैतन्यहैसो तिरवैनवेतु

कसतिन होनेकाअभावहै॥ अव

स्थांतरप्राप्तिरूपजोविपरिणा

मरविकारहैतिसकाउकलरूप

वृद्धिरूपविनाशतेनतीनोंकेअ

भावविषेअभावतेनिराशहै॥ अर

कैंचितकालअवस्थितरूपजोअ

स्तालरूपविकारहैतिसकोजे

मविनाशकेअसंभवहीतेजान

नेयोग्यहै॥ इसप्रकारइसचैतन्यका

षट्भावविकाररहित्यरकिसहेतुतें

है इस श्लोंकों विबेहेतु कहते हैं॥ स्वेति

तिइस काले। षट्विकारवान् जौदेह है

श्ररतैसैं और जो है तिह्नोंको श्रात्मा

प्रकाशता है॥ ननु तिह्नोंसकलोंका

जो प्रकाशता है सोकहा प्रकाशको उ

त्पतिकरके तिसप्रकाशकसे प्रकाश

ता है॥ जे कहो ऐसे है तो श्ररति श्रानेह

रूया जो श्रात्मा भी विकारी होया॥ उत

र। ऐसे नहीं सो कहता॥ चैतन्य जो है सो

साधन विना प्रकाशक है॥ ऐसे स्वंति

श्रबिविक्रभाव करके संपूर्ण पदार्थो

सर्व
कीजोविकारवस्थाहैतिन्कोकेसाही
हेतुतैंइसचैतन्यकोविकारित्वनहीं॥
इतितात्पर्यार्थः॥५॥ननुपूर्वोक्तप्रका
रकरिसेइष्टाव्यरदृश्यकाजोअन्वय
व्यतिरेकरविचारहैतिसकरिसव्यभिचा
रीजोमिथ्यारूपदृश्यहैं॥तिन्कोंतें
अव्यभिचारीइष्टासत्यस्वरूपजो
आत्मात्र्प्रद्वितीयहे॥सोतुमनेउ
धारकीया॥सोनिर्विकाररूपासे
र्वकाअधिष्ठानकहेयहकहनुमा
रानहींबणता॥काहेतेंजोआत्माअ

11

जाग्रत
स्वप्न
सुषुप्ति

वस्थात्रययोगी॥ अनुभवकाविष
यकरीताहै॥ उत्तर॥ जैसेमत्तक
हो॥ अवस्थात्रययोगीभाव होको
अवस्थात्रयसंबंधआत्माकेभा
सो सेहैंतिसकाकोरासाभासबुध्या
ध्यासहै॥ जातेंजैसेहैतातेंअवस्था
त्रययोगित्वआत्माकेमिथ्याहै॥ इस
अभिप्रायकरसाक्षीअरसाक्ष्य
काजोअन्वयव्यतिरेकहैतिसकरि
असंगअरकूटस्थस्वरूपताआत्मा
कीप्रतिपादनकरतेहैं॥ रचिक्षणया

वेद्यता इत्यादि सात श्लोकों करि श्लो०

चिद्व्याप्याया वेद्यता भुक्ते ज्ञानं धीस्तु

द्विधा स्थिता एकाहंकृतिरन्या

स्यादंतःकरणरूपिणी ॥६॥

टी० ॥ चित कहीये निर्विकल्पक स

र्वावभासक स्वप्रकाशक प्रत्यगात्म

स्वरूप आत्मा ॥ छाया कहीये तिस

का आभास ॥ तिस आभास का जो

अंतःकरणविषे व्याप्ति सो वेद्य कहीये प्र

वेश है ॥ तिसते भान कहीये विशेष

ते भासरूप आत्मा का होता है ॥ भावय

ह चिदात्मा स्वप्रकाशभाव के स्वा

12 पस्वतः स्वप्रकाशमानमी निर्वि

शेषभावते विशेषरूपसे नहीं

भासता॥ इति सङ्गमा विषे पुनः बुध्या

सकारविषयकीयाजो अनादि अ

निर्वचनीय अज्ञान है सो यद्यपि क

मीं [illegible] उद्भूत जो वासनाविशेष

है तद्रूप होयातें अन्तःकरणाकार

उत्पत्ति [illegible] वे है॥ इति सकाल इति सअं

तःकरण विषप्रकाशता [illegible] स्प्रावि

जो चिदात्मा है सो बुध्याकार भास

ता है जैसे तप्तलोहपिंड विषे अग्नि

लोहपिंडाकार भासे है॥ तहां बुधि

साधनत्र्प्रभेद से संग्रह रहना किं वाजा ताजो
आत्मचैतन्य है सो आभास अरथा
या ऐसे कहीयत है॥ तब बुधिका
आत्माका जो अभेद सो भासरहा
है तिसविशेष से सविशेष आ
त्माभासरहा है॥ चित्स्या यावेत्तनोमा
नें इस वाक्य से एहसिध्यकरया॥ अब एह
कहते हैं जो जिस बुधि विषे आत्माका
विशेष भासमान है सो बुधि दे प्रकार
करके स्थित है॥ एक अहंकार रू
पकर के इस शरीर अंतःकर्णरूपकर से

13

अर्थ यह मनोरूप [illegible] सेस्थित है। सं
कल्पविकल्परूप अरु वासना का
अधिष्ठान मन कहावत है। भावह
है कर्तृता भाव को प्राप्ति होई बु
द्धि चिदात्मा विवेक विशेष व्यवहार
की प्रवर्तक होती है इति ॥६॥ तहा
चैतन्य अरु जो बुद्धि आत्मा अरु
हैं तिन दोनो का [illegible] जो तादात्म्या
ध्यास कहा है सो दृष्टांत के स्पष्ट कर
दिखावते हैं। [illegible] ॥०॥ छाया है का
रयोरैक्यं तमायः पिंडवन्मतम्

तदहंकारतादात्म्यादेहश्चेतन

तामियात् ७ टी०॥ पूर्वार्धका

अर्थ यह है पूर्व श्लोक विषे कहा है तद्‌

पि कहा पत है॥ आभास अहंका

र का जो है वह है सो तप्त लोह पिंड की

न्याई माना है॥ भाव यह कि अहंकार के

चैतन्य व्याप्त भाव करके मैं हूं देह म

ने न कीया है॥ जैसे लोह को अग्नि व्या

प्त भाव करके अग्नित्व की प्राप्ति मा

नी है॥ इस देह जरता या जो लिंग

शरीराध्यास आभार विषे कर्त्व

14

भोक्तृत्वव्यवहारकीप्रवृत्तिका
कारणहै॥ अबउक्तजोअहंका
ररूपउपाधिहै तिसकेकथन
पूर्वकस्थूलशरीराध्यासआ
त्मामेंदिखावतेहै॥ तदहंकार
इसउत्तराधिकरको॥ सोजोअहं
कारहै तिसकेदेहसोंतादात्म्यतें
देहचैतन्नताकोप्राप्तिहोवैहै॥ भाव
यहदेहहीमैंहूं इसउत्तेपकेयोग्य
होताहै इती॥ अबकहाजोअहंका
रतादात्म्यहै तिसकोविषयमेद[illegible]

6

सेविभाग कर सेहिहकरतेहैं॥ ॥ अहंकारस्यपतादात्म्यंचिदाभास

देहस्यात्मनिस्थितिः सहजंकर्मजं भ्रांतिजन्यंचत्रिविधंक्रमात्

८॥ टी०॥ अहंकारकाजोचिदाभाससेतादात्म्यहैसोसहजहै॥ अर्थात यहअहंकारोद्भवकालविषेहीहोताहै काहेतेंजोअहंकारकीउत्पत्तिचिदाभासबिनानहीं॥ औरदेहसाथजोअहंकारकातादात्म्यहैसोकर्मजहै॥ अर्थात् यहप्राचीनजोधर्माधर्महैंतिनसेजन्यहै

काहेतें जो इह योग कर्माधीन है॥ अ
रु सो ही सोपचको अहंकार का ताद्वा
त्म्य है सो भ्रांति जन्य है॥ अर्थ यह भ्र
म मात्र सिद्ध है॥ इस प्रकार कर्म ते
अहंकार तादात्म्य त्रिविध है॥ ते से
मैं जाणता हूं॥ मैं मनुष्य हूं॥ मैं हूं
मैं होऊं॥ इस प्रकार त्रिविध अहंका
रतादात्म्य विषे कर्म [illegible] से अनुभव वि
चार को योग्य है इति॥ ८॥ अब कहा
जो त्रिविध अहंकार तादात्म्य है तिस
के निवर्तक है॥ कि कर्म [illegible] सिद्ध कर

१ पृष्ठ १८ पञ्चम

ते हैं। वृत्तिका। संबंधिनोः सतो नास्ति

निवृत्तिः सहजस्य तु। कर्म्मसं

यात्मबोधाद्विनिवर्त्तते क्रम

तु॥ ११॥ ६०॥ संबधोजो अ

हंकार चिदाभास है तिन दोनो के वि

षमानत्व सें तिस सहजताद्रष्य की नि

वृत्ति सर्वथा नहीं॥ अर्थ यह अहंकार

दि तें स्थिर जो चिदाभास है तिस की निवृ

त्ति अहंकार की निवृत्ति ही से है। जैसे

पात्रोदक हैं उदक विकार या जिस का जैसा

जो सूर्य का प्रतिबिंब है तिस प्रतिबिंब

16 की निवृत्ति याचोर करि निवृत्ति होहै।
अरु देहरूपा पापजो अहंकार तिनाका अध्य
है सो कर्म क्षयते निवृत्ति होता है॥ अ
र्थात् देहारंभक कर्म के क्षयते देह
पात करि निवृत्ति होता है॥ अरु दूसरा
रूपा पापजो अहंकार का नाशाध्य है सो
ज्ञानते दूर होता है॥ चकार करि एह
जनावता है जो आत्मसाक्षात्कारते
निविध्नताका मध्य एककालविषे
निवृत्ति होता है इति॥१९॥ इस प्रकार
अहंकाराध्यास भेद दोको अरु तन्निवृत्ति

ओं

हेतुकों सिद्ध करके अब जाग्रत अवस्था विषे

जो अवस्थात्रय संबंध है अरु संसारी

भाव है सो अहंकार अध्यास कहे है॥ इसी

को सिद्ध करने तांई यह प्रारंभ है॥

अहंकार लय इत्यादि तीन श्लोकों से

॥ अहंकार लये सुप्तो भवेद्देहोप्य चे

तनः अहंकृति विकारो स्यः स्वप्न:

सर्व स्तु जागरः १०॥ टी०॥ सुषुप्ति

अवस्था विषे अहंकार लय होने से अर्थात

यह अज्ञान रूप कारण साथ एकता

को प्राप्त होने से स्थूल देह अचेतनता

को प्राप्त होता है। अरु विशेष ईहां बाह्य

17 घटादिकोंकेअर्थहै॥जैसेघटादि
कसेहोअचेतनहीहै॥तैसेदेहभीसदा
अचेतनहीहै॥जातेंदेहतौचैतन्यतौ
व्यभिचारीहै॥अर्थयहदेहविषेजो
चेतनाहैसोचित्छायासंयुतजोअहं
कारहैतिससेंव्याप्तहै॥तिसकेवि
योगसेंतेदूरहोजातीहै॥तदि पुरुषसु
षुप्तिअवस्थाकोप्राप्तहोताहै॥
क्योंकिविषेजोसुषुप्तिअवस्थाकास
बंधहैसोअहंकारकीलयतारूपउपा
धिसेंहैएहकहिकेरकेअबआत्मा

केजो अवस्थांतरसंबंध है सो अहं अहंका
रकी स्थिति रूप उपाधि कर के है न ही स्व
तः यह कहते हैं। अहंसतीविकारोस्याद
संसारो। संपूर्ण जो जाग्रत स्वप्न है सो अ
हंकार विकार तें उपहत है इत्यर्थः॥ १०॥
ननु संपूर्ण स्वप्नावस्था अरु संपूर्ण जाग्रता
वस्था कैसे अहंकार विकार तें उपहत है।
इस अपेक्षा विषे कहते हैं। मू०॥ अंतः
करणवृत्तिस्थ चितिछायैक्यमाग
ता वासनाः कल्पयत्येषां बोधे त
द्विषयान्बहिः ११ टी०॥ चिदाभा
स साथ एकता को प्राप्त होई जो अंतः

14 कर्त्ताकी वृत्ति है सो सुख दुःख विषे वासना
ओंकूं संचय करती है। और ये अंतः
करणकी वृत्ति है जो गुनावस्थारूपी
इंद्रियोकर के विषयोंको कल्पना कर
ती है। इसी को कहते हैं॥ बाह्यार्थविषयक
जो अनुभव है तिसतें उत्पन्न संस्कारस
मूहका कारण है यह मर्यादा है॥ तहां बाह्या
र्थानुभव आगंतुक है अर्थ यह प्रतीतिमा
त्र है॥ आत्माका धर्म नहीं काहे तें जातें आ
त्मा कूटस्थ है॥ सो विषयानुभूं देह इंद्रि
यमनका धर्म भी नहीं॥ जातें देहआचेतन है

"जोई

आपसमो

ति आौ के अचेतन त्वक्रियावान भावसें है।।
जो कहो लोखे षयानुभव कैसे है तो सुनो।।
देहें द्रिय मन आत्मा के मिथ्या संबध होन्
सो होता है।। सो उत्पत्तिरूपा विषयानु
भव के स काधर्म है असे जान्या नहीं जाता।।
जो कहो ई आौके मिलाप हो ते होता है तातें इन
संघात का धर्म है। सो ऐसे भ्रम तू कहो जातें
संघात वा र [illegible] कारों ने निराकरया है
।। ननु देहके स्व पारिमान हेतु [illegible] घटादि
कों की न्याई अचेतनत्व के निश्चयतें।। और इं
द्रियो के भूतकार्यत्व तें भूतविकार निश्चयतें
कुठारादि कों की न्याई करणत्व हे तु [illegible]

चैतन्यरूपताके अभावतें॥ अरु तैसें मन
के भी विषयानुभवके आग्रहकाचुकसें
करताव सिद्ध होनेतें तिस मनके भी इंद्रि
योंकी न्यांई अचेतनत्वके निश्चयतें परि
शेष जो आत्मा है सो विषयानुभवतिस
का धर्म है यां ॥ ६ ॥ ऐसे मनके होजातें
निर्गुणश्रुतिसाथ विरोध होता है इसीतें
परिशेष आत्माका विषयानुभवधर्म न
ही॥ अरु तैसें श्रुतिसाथविरोधतें आत्मा
विषयोंका अनुभावक नहीं॥ सो श्रुति यह
जैसे गुणरूप जो दीपप्रकाश है सो स्वा
श्रयद्रव्यरूप जो तैलवर्त्यादिक हैं तिनको वि

नासैद्धान हीहोना।। मैसे अर्थ का प्रकाश
क जो ज्ञान गुण है तिस का आश्रय आत्मा न
हीं अद्वयत्व हेतु तें।। तातें विषयानुभव भी
भ्रम नहीं हैं।। काहे तें जो सत्य अर मिथ्या के अ
ध्यास संबंध सें होता है।। तहां सत्य स्वरूप तो
आत्मा है।। (तित्सत्यं स आत्मा) इन श्रुति प्रमाणतें
।। अर मिथ्या रूप मनादि विकार समूह है
।। (वाचारंभणं विकारो नामधेयं) अर्थ यह
विकार नाम वाणी विलास मात्र है इस श्रु
ति प्रमाणतें।। ऐसे यह सिद्ध होया।।
जो विचार आत्मा विषे अध्यास सिद्ध।।

अरु चिदाभास के[illegible] सेव्याप्त जो साभास
हंकार है। तिसका विषय पर्यंत जैलो
कांकी न्याई दीर्घरूपा जो वृत्ति है सो वि
षयानुभव है। ऐसी जो वृत्ति है तिसका आ
श्रयरूप जो अहंकार है तिससाथ अभेद
करके भासता जो चिदात्मा है सो अपरोक्ष प्र
मातृत्वभाव को अनुभव करता हुया
जाग्रत अवस्थावान जैसे होता है। इसी
प्रकार अहंकार विकाररूप जो विषया
नुभव है सो अपरोक्ष आश्रयरूप जो सा
भास अहंकार है तिस विषे वासनारूप

कसेलयहोताहै॥इसप्रकारसंपूर्णजा
गतवासनाकाआश्रयरूपजोअंतः
करणहैसोनिद्रादिदोषोंकरदबायाः
होयाअहंकारादिकोंकरकेदृइनवासनवानहो
या
अपहंमाहंममकल्पकरकेवि
र्मानजवहोताहैनअधिष्ठानभाव
करतिसविषेआत्मजोचेतनताहैसो
स्वप्रावस्थावानजैसेहोताहै॥इसीतैं
अहंकारोपादिकहंआत्माकेअव
स्थात्रयहैनहींस्वतः॥इसप्रकारआ

2।

मोऽहमस्मा प्युदाहृता है इसते सिद्धां ॥ संपूर्ण
हमारा कथन ते नैईं बही सिद्ध है ॥ ११
अब एकीकृत प्रसंग समाप्त करते हैं
श्लोकः ॥ मनोऽहंकृत्युपादानं लिंगमे
कं जडात्मकम् अवस्थात्रयमन्वे
ति जायते म्रियते पि वा ॥ २२ ॥ टी०
मन और अहंकार करके जो अंगीका
र करीये सो कहीये मनोऽहंकृत्युपाद
न अर्थ यह वासनौ का आश्रय जो मन
है तिसका संबंध से संकल्प करके विह
ल भाव को प्राप्त जो अहंकार है तिसका से
होया

लिंग शरीर अविद्या के कार्य इन्द्रिय मन तांका विकार है तत रूप है

मान्याहोया जो लिंग शरीर है सो समष्टि
हिरण्यगर्भरूपता करके कहे है॥ अविद्याका
कार्य जो सूक्ष्मभूत हैं तिनों के विकार तै
तैज उत्पन्न है॥ अर्थ यह भूत विकार ही है
भाव यह चित आत्मा विवेक अहंकार एक
रूप नहीं है ऐसे जो लिंग शरीर है सो अव
स्था त्रय को अंगीकार कर के वर्तता है ए
सी को कहते हैं॥ जाते यह जाग्रत स्वप्न
के उत्पत्ति होता है और सुषुप्ति विषे मृत्यु
ता है॥ वा शब्द मूर्छा का उपलक्षण कहै॥१२
सो इस प्रकार त्वं पद का जो अर्थ है प्रत्य

गात्मा सो सर्वावस्था साक्षित्वतें अवस्था त्रय तत्त्रय संघाततें विलक्षण आत्मा के कारी कूटस्थ नित्य निश्चय कीया ॥ अब तत्त्व दर्शन साधनतांई आरंभ करते हैं । श्लोकः ॥ शक्ति द्वये हि मायायाः विक्षेपावृत्तिरूपकम् विक्षेप शक्ति र्लिंगादि ब्रह्मांडांतं जगत्सृजेत् १३ टीका । अनादि अनिर्वचनीय कार्य व ... जगत नाम जो अन्यकार दि भ्रम सो ... से सिद्ध है । सो कारण बिना नहीं बनता ॥ सो कारन तिस भ्रम का ... रूप माया के द्विवि

धहै॥ सो द्विविधकारण श्रुति अरु युक्ति

सरविचारका विषय कीया परमार्थ तिनने

ही। किंतु मायामें हो। जातें। मायांतु प्रकृतिं

विद्यान्मायिनंतु महेश्वरमितिश्रु

तिः॥ यह श्रुति परमेश्वर करके अधिष्ठित

जो माया है जिसको प्रकृति शब्द करके कहि

यावती होई माया है और परमात्मा जिसका

की ऐसा जो अनादि अज्ञान है सो जगत

का उपादान कारण है एह कहता है॥ तहां

श्रुति के उपक्रमरचि कौन कारण है तहां

कहीयत है ब्रह्म कारण है॥ ब्रह्म को जगत

माया
प्रकृति
अज्ञान
एकहैं

कारणत्वरकिसकोलेकरहै॥ ऐसेविचा
रकर कालअरस्वभावादिकोंकेकारणत्व
जोवादीयोंनेसिद्धहै तिसको मध्यविषे
आनकरके रतिसकेअसारत्वको॥आ
त्मापनी (ग्रा) सुखदुःखहेतौ इत्यंतेवाक्य
करके निरूपक रीयतहै॥ अर्थयुह के
स्वभावादिकोंके कारणत्व होने से आत्मा भी
सुखदुःखहेतुतें अनीश होताहै॥ तातें का
लस्वभावादिककारणनहीं॥ किंतुमाया
हैतहांश्रुतिहै॥ ध्यानयोगानुगताअ
पश्यन्देवात्मशक्तिंस्वगुणैर्निगू
ढामिति॥ अर्थयहध्यानयोगविषेस्थि

नजोपुरुषहैंवेअपरोक्षरूपतेमूंढी
होइदेवात्मशक्तिकोदेखतेभयेहैं॥
सोइहश्रुतिआत्मशक्तिसाभासमा
याहैजगतकाकारणहैएहअनिर्वचनीय
वहै॥अरुश्रुतिकेविषयएहकहतेहैं
सआत्माकेकार्यकारणरूपतानहीं॥
अरुइसआत्माकीशक्तिनानारूपप्रव
र्त्तकीजातीहै॥सोस्वाभाविकीज्ञानबलक
यारूपाहै॥एहश्रुतिहै।सोजोमायारूप
ईश्वरकीशक्तिहैसोईजगतकेसर्वप्रका
रकारणत्वकारनेवाहकाहैएहीकहतेहै

24 ।। तैसे ई हां श्रौर स्मृतीका कथन भी
है ।। निश्चय कर यह जगत आगे असत
भया ।।१ श्रुति स्मृति ते पहिले यह जग
त अव्याकृत रूप होता भया ।।२ ते महे
ता भया ।।३ ।। आगे नाम रूपसे व्याकृ
त यह जगत स्थूल होता भया ।।४ ।।
निश्चय कर येजगत आगे असत हो
ता भया ।।५ ।। जिस कारणते ये कार्य
रूप होता भया ।।६ मयाध्यक्षेण प्रक्र
तिः सूयते सचराचरं इत्यादि स्मृति व
चन हं विचारणे योग्य है । युक्ति ते
और

=।

सो क्षण भंगुर जो कारण कहता है
सो सहकारी की अपेक्षा सहित है वा
सहकारी की अपेक्षा बिना है॥

जगत् माया मय है जाते संघात
आरंभ परिणाम पक्ष युक्ति नहीं
सहि सकते सो दिखावते हैं॥ संघात
वादी सर्व पदार्थ क्षण भंगुर कहते हैं॥ अ
रु तिन क्षणभंगुर के कारणत्व कहते हैं॥
सो तिन प्रति यह विकल्प है॥ हे वादिन तु
मों के कारणत्व सहकारी सापेक्ष है कि
तन्निर्पेक्ष है सो दोनों नहीं बनते॥ जे कहो
सहकारी की अपेक्षा सहित तिन्हों के
कारणत्व है॥ तो सहकारी के आगमन

उत्पत्ति क्षुर नाश्या के नेम करनो के आभावन्नें

25 पर्यंत भावी व्यतिरेक्ति कहिए तो कार्यांतर की हानि होती है॥ अरु जे कहो निर्वृत्ति को कारण ताहै॥ ता निरमत के अभावनें कार्य का हाहो या चाहिये अर्थ यह जो पूर्व क्षुर का अन्वितन होवै॥ अरु जे कहो पूर्व क्षण उत्तर क्षण का उपादान है॥ सो भी नहीं बनता काहे तें जो कार्य उपादान अन्वित होता है॥ सो इहां पूर्व क्षण उत्तर क्षण अन्वित नहीं॥ जे कहो अन्वित है तो क्षणिक वाद हत माना॥ अरु जे क

होपूर्वरूप उत्तररूपप्रति उपाधन
नहीं निमित्त नहीं है। तौ भी नहीं बने ताका
हेतै जो दोनों रूपकत्व हेतु सो उपका
रक उपकार्य नहीं बन तै। इसप्रकार
संघात वादयुक्त असत है। हे से आरंभ
वादभी युक्ति असह है। जाते नैयायिको
के मत विषे पूर्व परमाणु निरवयव माने हैं
तिस निरवयवपने तै परमाणूं के संयोग का
अभाव है। संयोगाभाव तै उपचयाभाव
है। जो उपचय करके रहित है सो उपादान

कानियमहै

नहीं होता॥ इसीतें आरंभ वादही
असंभवरूपहै॥ जैसेपरिणामवा
दयुक्तिअसहहै॥ सोहदिखावतेहै॥
परार्थकें स्थितवानष्टस्वरूपांतर
उदेकें असंभव त्रिगुणात्मकजोप्र
धानहैतिसकीसाम्यावस्थारस्थितसं
ति महदाकारतानहींबनती पूर्वकहे
नियमकेविरोधतें॥ अरजेकहोसाम्या
वस्थानष्टसंतिमहदाकारताहोतीहै
सो नहींबनती॥ जातें प्रधानस्वरूपका
रणकेनष्टसंततिनिराश्रयमहत्तकी

ऐसे कहते वादी पूछते ॥२

अनुत्पन्न है ॥ ननु प्रधान के साम्यावस्था न छूटंती हैं गुणात्रय के विद्यमानत्व ते महानरने रायुवनहीं होता ॥ तहां एह द्वितीयकल्परसिद्धांती करता है ॥ कहो जो साम्यावस्थान छूटंती नहीं गुणा अविकारी वर्त्तते हैं वा विकारी वर्त्तते हैं ॥ जे कहो अविकारी वर्त्तते हैं ॥ तदमहातत्त्व का उपादान नहीं बनते ॥ जाते पूर्व स्वरूप ते रूपांतर को प्राप्त न भये ॥ अरजे कहो विकारी वर्त्तते हैं ॥ तो गुणावस्थान छूटती ते ते उपादानमहत्तत्त्व की उत्पत्ति असंभव है ॥ इसी प्रकार उत

श्री

27 ऐसें कार्य की उत्पत्ति तैं पूर्व पूर्व कारण के
स्थित वा नष्ट संतें नहीं बनता।। महत्
त्वतें अहंकार अहंकार तैं पंचतन्मात्रा
त्र्यौं तैं पंचमहाभूत इत्यादि जो सांख्य
मतप्रक्रिया है।। सो चतुरों के चित्त विषै
चतुराई कौं नहीं धारती।। कछु और भी
कहते हैं।। कारण के अविकारित्व सं
तैं कार्य की उत्पत्ति दृष्ट नहीं आवती।।
अरु कारणत्व संतें कारण के अनित्य
त्वप्रसंग होता है।। अनित्यत्व संतें जगत
शून्यादिधिष्ठान होता है।। इसीतें अलं।।

तैसे कारणावत् कार्यरूप जगत भी स्वैचा
र कारविषय कीया है यं निसत् है नअ
सत् है॥ जे सत् कहीये तर पूर्वसे ही सत्
रूप की उत्पत्ति नहीं बनती॥ अरु जे अस
त् कहो तर अत्यंत असत् की उत्पत्ति भी अ
संभव है॥ लोह कार की अरु रथाविद्यमान
से रथ उत्पत्ति कारविषय नहीं करीयता॥ अ
रु अत्यंत असत् ससपुष्प भी नहीं उत्पत्ति
कारविषय कियाजाता॥ इस प्रकार परिशे
षात कार्य कारण माया मय ही है॥ इसी को
कहते हैं॥ सृष्टि के वयहीं तें इस तासो सामा

28

सम मायाकी द्वै शक्ती सर्वलोको विषे प्रसिद्ध हैं॥ एक आवर्ण दूसरा विक्षेप॥ तहां सर्व को अवभावत्र माया हैं॥ मैं ब्रह्म नहीं मैं मनुष्य हूं॥ तहां विक्षेप शक्ति के द्वारा जो माया मय कार्य है तिसको कहते हैं॥ सप्त दैश अवयव रूप जो सूक्ष्म शरीर है तिसतें आदि जो लोक रूप सम स्थूल शरीर पर्यंत जो जगत है तिसको विक्षेप शक्ति रचे है॥ अर्थ यह विक्षेप शक्ति प्रतिधान जो अज्ञान है सो रचे है॥ सो तहां वृद्ध वचन हं प्रमाण है॥ अज्ञान

मत्र रूप

आत्मतत्वमात्रके विषय अरु आश्रय केवल है से
आवर्ण अरु विक्षेप शक्ती के के संबंधते
जीव अरु जगत रूप आकारों कर के प्रका
शमान आत्मरूप को आछादन कर विक्षे
प करता है इति ॥१३॥ जाने माया में है अ
ए इसी तें रज्जु की न्याई अधिष्ठान भाव करसे
विवर्तमान माया के सत्ता अरु स्फूर्ति देने के
स प्राप्तिमात्र कर के कूटस्थ ब्रह्म है कार
ता ऐसे कहीयत है ॥ परमार्थतें ॥ इसी
को कहते हैं तत्र छिन्मात्र ब्रह्म रूपे स
च्चिदानंद वस्तुनि अंबु फेनादि
वत् संवित्मात्र रूप प्रसारणम् ॥१४॥

29 रा॥ ब्रह्म कहीये श्रमे द्या वकपूर्व

सच्चिदानंद स्वरूप तिस ब्रह्म विषे ना

म रूप का प्रसारणा स्वष्टिनाम है॥ अर्थात्

यह नाम कहीये वाचक शब्द॥ अरु रू

प कहीये वाच्य का आकार॥ तिन दोनो का

प्रसारण कहीये प्रगटी करणा सो स्रष्टि

नाम है॥ सो स्रष्टि नाम पूर्व पूर्व भांति वा

सना जो जीवों की है तिसो करी के ब्रह्म

विषे भासे है॥ सो एह जगत् अधिष्ठान

स्वरूप ब्रह्म ते भिन्न अरु अभिन्न कहणा

तां ईश्वर का कथ्या ही है॥ जातें परमेश्वर रूप नहीं॥ अंबु विषे फेन दृष्टांत॥ जल विषे दृष्ट आवता जो फेना दिक है सो जल तें भिन्न नहीं॥ जातें जल विनें तिस का रूप ही रूपता नहीं होता॥ अर जातें पृथ्वी कौं अंश अग्नि का है अग्राम कहै॥ अर जल तें अभिन्न है नहीं॥ जल तें भिन्न दृष्ट आवता नें॥ अर अद्व ता हेतु तें॥ अर भिन्ना भिन्न विरोध हेतु तें असिद्ध है॥ इसी प्रकार जगत चिदात्मा तें भिन्न नहीं चिदात्मा तें भिन्न स्व संवता

इहां इतनें विषे दृष्टांत दिषाया

३०

जेउलते

असरूपनिरूपणातें॥ अरूपभिन्न नहीं॥ मैं भिन्नदृष्टआवताही तें अरु इंद्रिगोचरत्वतें अरुस्थूल अनेकप्रकारत्वतें॥ सच्चिदानंदवस्तुभिं येब्रह्मकाविशेषणा ब्रह्मस्वरूपकाज्ञापक है॥ सत इस पदकरि अरु आगमापाई त्रिपंचतें विलक्षणा सदाएक स्वरूप है ब्रह्म एह कहा॥ अरु चितइस पदकरि स्वपनातन अलुप्त प्रकाश जउ प्रपंचतें विलक्षणा है ब्रह्म एह कहा॥ अर

सें

आनंद इस पद ॥ परमानंद स्वरूप कथ
न करके परम पुरुषार्थ रूप जणावता
तें दुःख रूप संसार प्रपंच तें भूरुवकी खि
लक्षणता कही ॥ अर वस्तु शब्द बाधा
भाव सूचक है ॥ इन वस्तु रूप विशेष
णा करके दृश्य स्वरूपता का च पृतु
ल्य जो जगत है तिस तें विलक्षणता जणा
ई ॥ औ से संस्ते कार्य कारणता रूप करके
अर वाच्य वाचक रूप करके अरु उप
कार्य उपकारक रूप करके भावना को
विषय करती ता जो प्रपंच है तिस तें विलक्ष

किया

CC-0 Punjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharara Initiative

માયાની વિક્ષેપશક્તિ સમાપ્ત।

માયાની આવરણ શક્તિ પ્રારંભ।

ताजोज्ञानहैतिसज्ञानकेआच्छादिमा
वमायामयहीहै॥१४॥पूर्वोक्तप्रका
रसेविक्षेपशक्तिद्वारामायाकाकार्य
जोप्रपंचविभ्रमहैतिसकोदिखाकरके
अबआवरणशक्तिहैकारणजिसका
औरजगत्स्वरूपकाअविवेकहैलक्षण
जिसकाऐसाजोआत्माकेसंसारित्व
हैतिसकोदिखावतेहैं॥श्लोकः॥अं
तर्दृग्दृश्ययोर्भेदंबहिश्चब्रह्मसर्ग
योः॥ यावृणोत्यपराशक्तिःसासं
सारस्यकारणम्॥१५॥टी०॥

कहीये

अंतर्मुखहैं ऐसे अर्थविषे ब्रह्मका ज्ञान
जोप्रत्यगात्माहैतिसविषेजोवृत्तिकेद्रष्टा
आत्माकाजोदृश्यतैंभेदहैतिसकोआछा
दनकरेअरफेरदृश्यकाजोद्रष्टातैंभेदहै
तिसकोजोअतिआछादनकरो।अरतैसेबा
ह्यंपरिपूर्णजोब्रह्महैतिसकाअरप्रपंचका
जोभेदहैभेदकहीयेविलक्षणस्वभावको
आवर्णकरे।अर्थयहब्रह्मस्वभावजो
सत्यज्ञानानंदैकरसात्मत्वहैतिसको
अरतदविपरीतलक्षणप्रपंचस्वभावको
जोआवर्णकरेसोविक्षेपशक्तितैंभिन्न
कहीयेबाह्यव्यापकब्रह्मविषे॥६

प्रसिद्धसंसारकाकारणअविद्या
तिन्हैसैकहीयतहै॥भावयहस्वरूपके
अस्फुरणतेंआपकेविषैपरिच्छिन्नतावोमा
नताहूया स्वप्नविषैजैसेलोकसंसार
कोप्राप्तिहोताहै॥इसवार्त्ताकेप्रसि
धत्वतें ईहांयुक्तिअपेक्षितनहीं॥१५॥
सोअविद्याकैसंसारकाकारणहै
तहांतिनशिष्यकौनसंसारीहो
ताहै इसअपेक्षाविषैसंसारीकेस्वरू
पकोविवेककरकेदिखावतेहूयेसं
सारकेमायामयत्वकोकहतेहैं॥श्लो०॥

॥ साक्षिलः पुरतो भाति लिंगं देहेन संयुतम् ॥ चिति छाया समावेशा जीवः स्याद्व्यावहारिकः ॥ १७ ॥ टी० ॥ साक्षी जो सर्वांतरप्रत्यगात्मा है तिसके आगे ऐसे अविद्याने कल्प्या हैकार है प्रधान जिसमें प्रत्यगात्मा अंतःकरण ऐसा लक्षण स्थूल देह संयुक्त भासता जो लिंग देह है सो लिंग देह चिदाभास व्याप्त होता मैं कर्ता हूं भोक्ता हूं मनुष्य हूं काणा हूं बधिर हूं इत्यादि व्यवहारवान जीव होता है ॥ १८ ॥ ईश्वरका जो स्वरूप आत्मा ईश्वर का ... लिंग शरीर

33 षेअध्यासहैसोईअध्यासहैकारण
जिसकाऐसाजोकर्त्ताहंभोक्ताहंइ
त्यादिव्यवहारोंकाआश्रय...लिंगश
रीरकेजीवत्वहैतिसकोकहिकरअब
बंधअरमोक्षकेधैयधिकरणकी
शंकानिरासार्थचिदात्माकेजोअन
नात्विषेअध्यासहैसोईअध्यासहैका
रणजिसकाऐसाजोचिदात्माकेजी
वत्वहैतिसकोकहितेहैं॥श्लोकः॥१८
अस्यजीवत्वमारोपात्साक्षिण्यपि
चभासते आवृतौतुविनष्टायां

स्थूलदेहके ... ... होताहै

भेदजातं मयाजितन् १७॥टी०॥

पहिलें कह जो लिंग शरीर है तिसकों

अध्यासतें जो जीवत्व है सो जीवत्व साक्षी

प्रत्यक् चैतन्य विषे भी भासता है। तैसे

से तिस संघात विलक्षण जो साक्षी है सो

संघात के तादात्म्य अध्यासतें संसारी

जैसें भासता है। अर्थ यह परमार्थतें

संसारी जीव का स्वरूप किसी प्रकार

सिद्ध नहीं होता। आत्मा के भास

ता जो बंधन है सो आत्मा ज्ञान निमित्तक

है ईहां एह अन्वय करिहि कार अब वातें

३५

रेककोकहतेहैं॥ आवृतार्थविनइम
उत्तराधीर्थसो आत्मतत्वकीआधा
हिकाजोकाईअज्ञानकीआवर्णरू
पाशक्तिहैतिसनष्टसं तिवूर्णलि
गशरीरजीवसाक्षीरूपजोमेदस
मूहहैसोआभृयबक्षधितहोजा
ताहैइत्यर्थः॥९७॥सोइसप्रकारअ
न्वयव्यतिरेककरकेआवर्णशक्तेप्र
धानजोअज्ञानहैतन्निमित्तकजोआ
त्माकेसंसारहैतिसकोकरहेकरअ
र्थविरहेपश्चात्क्तेप्रधानअज्ञाननिरमि

मायाकीआवरण॥ शक्ति आत्म तत्वकोआ च्छादनकर तीहै अनोके नष्टहोनेसे केवलचेतन रहताहै।

ते

त्व

तिकजोब्रह्मकेस्वरूपपंचतत्त्वहैइसीकोस्व
रूपकरदेखावतेहैं॥ श्लोकः॥ सर्गस्य
ब्रह्मणस्त द्भेदमावृत्यतिष्ठति या
शक्तिस्तद्वशाद्ब्रह्मविकृतत्वेनभा
सते १८ टी०॥ जैसेदृश्यरूपस्वरूपत्व
शात्माद्रष्टाकेविवेककोआछादनक
रतीजोआवर्णशक्तिहैतिसकीन्यां
ईजोविक्षेपरूपाशक्तिपर्मात्मातेप्र
पंचकाजोभेदहै॥औरकहीयेब्रह्मसा
पंचसबंधित्वलक्षण॥तिसकोआवर
र्णकरकेरहतीहै॥तिसविक्षेपशक्ति

कीमहि मानें ब्रह्म सप्रपंच भाव भास

भासता है ॥ अर्थ यह जगत स्थिति

की निप्रलय कारण है ब्रह्म अरु सर्व कर्मा

है अरु सर्वकाम है इत्यादि वाक्य विषे

ज्यांई सप्रपंच की विवक्षा होता है इत्यर्थः ॥ १८

अन्वय को कहि कर अब व्यतिरेक

को कहते हैं ॥ श्लो० ॥ अत्राप्यावृत्ति

नाशेन विभाति ब्रह्म सर्गयोः ॥

भेदृष्टतो विकारः स्यात्सर्गेनि

ब्रह्म लिंककं चित् ॥ टी० ॥ १०

अत्र अपि कहि ये ब्रह्म विषे आव

यह

तांकै नाशसें तिसअर्थनआवर्र्णस्वपत्र

विद्याके नाशसें तैअलम्अरसर्गका

जोभेदहैअर्थयहहैहअलंकारताहै

अरपहजगत्‌कार्यहैंखेद्रपअविद्या

तैंजोभेदस्थितहैसोभेदअविद्यालि

वतिसैंतैनिवृत्तहूयाफेरनहींभासता

॥जातैंअविद्याअरमायारहितऐसो

सेवाच्यजोअज्ञानहैरतिसमसेकल्पि

तहैरविकाररतिसतैंसर्गनिर्मितिक

जोविकारहैसोंअलरवैषनहीं॥१९

कदाचितन

अर्थयहहहजोभेदहैसोसर्गकेसंबंधसेहै

वतिनाका...तजोअर्थकाभावहै

इतने पूर्व कहे त्वंपद संभूत [illegible] कैसे है
वे असंग कूटस्थ ही जो आत्मा सा
क्षी है सो त्वंपद का लक्ष्यार्थ है। अ
रु जैसे सदैव निःप्रपंच कूटस्थ
ही जल साक्षी तत्पद का लक्ष्यार्थ
है। दोनों विषे भासता जो रविखे
षगुण है सो मायामय त्वं तत् का ल
क्षण विषे [illegible] परमार्थ से नहीं। इसी
ते तत्क्षन जो मे रहै सो कोई एक [illegible]
आत्म वस्तु विषे नहीं। संभावना क
रिन सर्वज्ञादि गुणो ने उत्पन्न [illegible] जो जीवेश्वर
ता मे रहे है॥२

रीता॥इसप्रकारतत्त्वंपदार्थशो
धनकीयो॥अबतिनदोनोंकेएक
त्वकाप्रतिपादकजोवाक्यार्थहैतिं
सके कहतेहैं दोनोपदोंकाजो
वाच्यार्थअरलक्ष्यार्थहैतिसको
दोयश्लोकोंकरकेक्रमतेंकहतेहैं॥
श्लो०॥अस्तिभातिप्रियंरूपंनामचे
त्यंशपंचकम्॥आद्यंत्रयंब्रह्म
रूपंजगद्रूपंततोद्वयम्॥२०॥टी०
जैसेएकहीदेहविषेअरतत्त्वाद्य

घटरखिबेऊक्तिजैसेसंताकामह
ताहै॥ऊरभांतिजैसेस्फुर्त्तीकामह
ताहै॥ऊरप्रियजैसेऊनकूलवेदनी
यभावसेसुरवात्मताकामहता
है॥ऊरजैसेरूपजोऊकाररवि
शेषहै॥सोदेहरखिकरऊरचर्ण
रिरचनासमूहहै॥ऊरघटरखि
बेंपूर्बऊरबुध्नोदराकारलक्षणहै
॥ऊरनामजोशब्दहैऊरघटजैसै
सेहै॥इसप्रकारजोऊंशपंचकहै
बुंढरवत्तउदरहैघटका॥२

ऐसें आदि जो सत्ता स्फुर्त्ती अरु प्रिय
ता तीन हैं सो तीनों प्रत्यग अभिन्न जो
ब्रह्म है तिसका परमार्थक स्वरूप है।
अरु इतिसें पीछे कहें जो नामरूप द्वै तें
हैं सो जगत रूप हैं। अरु यह वाचा
रंभण श्रुतितें मिथ्या ही हैं। इस
[illegible]से बाह्य अरु आंतरीय जो संपूर्ण
पदार्थ हैं सो व्याख्यान कीये। ऐसे
(कहे)
संनिये जो पंच कहे सो अस्ति आदि
पदों का वाच्य होता है। इति प्रसिद्धं ॥२०

३२

तेसंपद्रकावाच्यार्थकहेहैं॥जोनामरूप

हैतिसको नामकरके

38

अबवाच्यार्थकोस्पष्टकरहेहुरूपसबजोंने

नामरूपकालरूपर्थहैतिसकोअधार

काउपदेशकरतेहैं॥श्लोक॥ख

वाय्वग्निजलोर्वीषुदेवतिर्य

ङ्नरादिषु अभिन्नात्सच्चिदा

नंदान्निचेते रूपनामनी॥२२॥

आकाशतेआदिलेजोपंचभूतमूत

रूपहैं॥अरुदेवतिर्यगादिमेहक

रकेभिन्नभिन्नजोअध्यात्मरूपहैं॥ति

नकोविवेकमेदृष्टसेव्यापकजोस

देवतिर्यगादिशरीरमेहैसंसर्गहैतिनको

विवेकरुकरकेआत्मासेविवे

तचितआनंदअधिष्टानरूपआत्मा

हीरूपहैतिसतेंरूपअरनाम जोहैं

सोपदार्थपदार्थप्रतिभेदकाविषय

करीयतहैं॥जैसेकेत्यों सत्तिसंपूर्ण

पदार्थोंविषेअनुस्यूतजोसच्चिदा

नंदात्मकवस्तुहैसोतत्वंपदकालक्ष्य

स्वरूपहैइत्यर्थः॥नन्हेरसिधांतिन

जगतविषेभावनाकरविषयकियाते

जोसत्तास्फूर्तिआनंदहैंतिन्होंकेप्रत्य

गःअभिन्नजनरूपत्वकिस्यप्रकारसे

अर्थ विहर किसी प्रकार नहि

मा है॥ जातें इदं ऐसें सर्वपदार्थ
भिन्न भिन्न प्रतीतिका विषय होते हैं
सनं होके प्रत्यगात्मासे भिन्नत्व है॥
सिधांती ॥ विषयों विषे भावत
जे सधीज्ञाने दृहैं ते सर्वि तत्तं रवि
षयों के विचार्यमाण संते ते ज्ञोवि
बे न हीं सिद्ध होते सो दिखावते हैं॥
विषे सदिदं ऐसे जो बाधवर्जित प्रतीत
है॥ तिस विषे ज्ञेदं जो ग्रहण करी
ता है सोई कालांतर विषे ना ज्ञेदं इह
इस प्रकार असदं बुद्धि का विषय

४२

होता है। औ से संवित एकही पदार्थ

विषे आरोपित्त्वना रोपितत्व के पारो

धतें विषय के सत्य और मिथ्यात्व का नि

श्चय नहीं होता। जो कहो काल भेद क

से एकही पदार्थ विषे सत्यासत्यत्व क

हिं सिद्ध होवगा तें पूर्वोक्त दोष नहीं आ

वता। तो शुक्ति विषे जो रजत है ति

स के हूं सत्यासत्य पर्याय रूप होवें

गे तो ... और

भ्रांति और तिस भ्रांति का बाध जो व्यव

३ ४०

कैव्यभिचारत्व संकेत॥३

४० हारहैतिसकाप्रसंग हूं न

बतो ॥तिसातें व्यवहारकस

रूप तंजोवदार्थहैंतिसकों ॥ इदंको

सेजोअव्यभिचारीभाव॥ सेभा

सनाहैसोएकही सत्तस्वरूपहै॥ति

सकारकिसीकालविषेअरु किसी

पदार्थविषेनाशनहीं॥इस

प्रकारसोसतसिद्धहै॥अरव्य

भिचारीजोविशेषहैंसोमिथ्या

हैइतिसिद्धं॥तत्सत्यंसआत्मा इत

श्रुतितें

तिसस्वरूपकै इदं भैसे ब्रह्मभेद
से जो भासता है सो भासता ब्रह्म मे
द से अध्यस्त जो घट पटादिक है
तिन्हों का संबंध नाही है कारता जिसका अ
सा विभ्रम नाही है।। अरु अहंकारादि देहा तो
दिखे जो अहं भै सो उत्पन्न है सो तद्रूप अध्या
स कारता कहे है।। इस प्रकार स्वरूप ते
दै ब्रह्म भया।। इसी प्रकार घट भास
ता है पट भासता है घट इष्ट है पट इष्ट है
ई हो घट पटादिक को केवे स्पर ब्रह्म मि

चारकौ निःस्फुर्त्ती अरु इष्टता के स्वतः
भेद के अनिरूपकतें घटपटादिक के
व्यभिचारत्वसंतें अव्यभिचारी जो स्फु
रणा अरु इष्टता है तिन दोनों के सर्वा
नुस्यूतसत्ता की न्याई स्वभाव के अव्य
भिचारतें ब्रह्मात्मता युक्त है इसीतें श्रु
ति है। ज्ञानं ब्रह्म आनंदं ब्रह्म विज्ञानमा
नंदं ब्रह्मेति च। ब्रह्म के देशकालवस्तु
परिच्छेदरहितत्वरूप जो अनंतत्व है
सो भी कथित है। जातें देशकाल के

जउत्वकरके घटपटादिकोंकीन्याई

अध्यस्तहेतुतें मिथ्यात्वहै॥तिसीतें

व्यभिचारीजोनामरूपहैंतिनदोनों

केत्यागकरकेसत्तास्फुरणेंब्रानंदमा

मजोहैआत्मापदार्थ सोलखाइकर

केब्रह्मात्मस्थितिइसप्रकारवाक्यार्थ

रचितेनव्यहै॥तिनसत्तास्फूर्तिआनंदोंवि

बे सत्तारूपकरके घटपटादिकोंतें

भेदत्व सेस्थितजोब्रह्महैसोनत्यरव

रेलक्षणीयहै॥स्फुरणोंअरप्रेमास्परूभाव

करके देहादिअहंकारांतोंविषेजोअहं

42 अहंकेस्व प्रत्यगात्मा चेहै तिसतें भेद

त्वकरस्थित जो प्रत्यगात्मा है सो त्वं

पदार्थ लिरूलक्ष्य है॥ इन दोनों के

परस्फुरणरूप गुण विषे निवृध्य जो मैं रहै

तिसतें भेद भासमान संवित्ति लक्ष्

णाकरके स्वरूप में इन है॥ जातें स्फु

रणरहित संवित्ति सत्ता के जडत्वापत्ति हो

ती है॥ अरु सत्ता व्यावृत्ति स्फुरण के अ

सत्व प्रसंग होता है॥ अरु सत्ता स्फूर्ति र

हित आनंद का असंभव है अरु असं

भव भी है॥ इस प्रकार अखंड वाक्य

र्यकाल्सिद्धमंडू ॥ २१ ॥ पूर्वोक्त रीतिसें

सर्जान्याहैवा वयार्थजिसनेतिसके वाक्या

र्थरूपअखंड ब्रह्मनें स्वस्वात्मसाक्षा

त्कारकें उदैनें भिन्नसाधनरवि नष्टबोकोउ

परे नष्ट करते है ॥ ५७ ॥ उपेदृश्यनामरू

पेंहसच्चिदानंदवस्तुनि समाधिं

सर्वदाकुर्याद्धृदयेवाथवाबहिः

२२ टीका ॥ पूर्वोक्तप्रकार सेवा

च्यांत्तरूपजोनामरूपहै तिनदोनों

कों उपेक्षाकरकें अर्थयहजोअवस्तुर

पत्वतें बाधनकरकें सच्चिदानंदवस्तु

रविषेअर्थयहलक्ष्मरवडांर्थएकरस

४३ खिबेसर्वदासमाधिकूंकरै।समाधि
कहीयेअखंडस्वरूपअहैजोब्रह्म है
तस्वरूपत्वकरकेचित्तकोस्थिरीभाव
अर्थयहत्तिसस्थिरीभावकोकरै।।
कौनस्थानविबेसमाधिकर्तव्यहै
इनअपेक्षाविबेकरतापुरुषकी
जोबुधिहै।तत्सामर्थ्यकेनरतमभावके
रकेस्थानभेदकोकहत्तेहै इदवाच
वाबहिःसत्तरीयाआकारको।।इस्ते
रस्यांतहाअंतःअरबहिअस्त्रविबेक
र्तव्यजोसमाधिहैतिसकोदुप्रकार
के

मेदर्संसिध करते हैं॥ सात श्लोकों करि
॥ तहां चार श्लोकोंकरि सहृदय विवेक स
व्यसमाधिमें द्रष्टाकों कहते हैं॥ सविक
ल्पोऽविकल्पश्च समाधिर्द्विविधो
हृदि दृश्यशब्दानुवेधेन सविक
ल्पः पुनर्द्विधा २४॥ टीका॥ हृदयवि
वेक कर्तव्य जो समाधि सो सविकल्प
अरु निर्विकल्प के भेदकरि द्विविध है
॥ अरु तिनमें सविकल्प समाधि है सो दृश्यशब्दानुवेधमें दकर द्विविध है॥ ता
ना ज्ञान ज्ञेय विकल्पों के भलीप्रकार

दोनो
विषे
जो

नंलयत्वंकरके अखंडसच्चिदानंद आत्मा विषे चित्त का जो समाधान है सो सविकल्पक समाधि है॥७ करि विकल्पों के सम्यक लय संते सच्चिदानंद आत्मा विषे जो चित्त का समाधान है सो निर्विकल्पक समाधि है॥ प्रथम जो सविकल्प है सो पुनः द्वै प्रकार कर कहीयत है॥८ करि दृश्यानुविद्ध दूसरा शब्दानुविद्ध प्रकार कर कै॥ दृश्यानुविद्ध ... आदि जो दृ श्यानुविद्ध है ते सब को सिद्ध कर दिखा वते हैं॥

आविरभावहै

श्लोक॥ कामाद्याश्चित्तसादृश्यं तत्साक्षित्वेन चेतनाम्॥ ध्यायेद्दृश्यानुविद्धोयं समाधिः सविकल्पकः॥२४॥ टी॥ कामादिक चित्तही क्रियावृत्ती है जाते चित्तकी न्याई आविर्भाव तिरोभाव धर्म संयुक्त है॥ सो आविर्भाव अरु तिरोभाव को देखता है॥ सो चित्तवृत्ति के भावना के विषय होवता तें अरु सुषुप्ति विषे चित्तके अभाव तें कामादिकों का तिरोभाव है॥ अथवा चित्तकी न्याई सदा दृश्य वृत्तों वृत्तिओं के चिनध

र्मत्वहै॥जातें चित धर्महैं आत्माकेधर्मन
हीं॥इसीतेंरत्नत्रयकेसाहीभावकरभि
न्नप्रकाशमानस्वप्रकाशरचिदात्मस्वभा
वरूपाजोचेतनाहैतिसकोध्यानकावि
षयकरो॥ध्यानकहीयेपूर्वोक्तजोरवेचा
रहैतिसकरेतैंतरेकमनभावकरर
हणा॥इसप्रकारनिरूपितध्यानकोदृश्या
नुविधसमाधेकहीयतहैं॥इसप्रकारस्थू
लरूपसविकल्पकसमाधिकोकरिकर
अबसद्रूपआप्तानुविद्धजोइसरीस
माधिहैतिसकोकहतेहैं॥श्लोका॥असं
गःसच्चिदानंदःस्वप्रभोद्वैतवर्जि

नः अस्मीति आद्यविद्योयं सविकल्पः समाहितः २५ टी० । असंग कहीये कामादिक वृत्तिमान चित्त के संग तें रहित है अरु सच्चिदानंद कहीये अनंत जे दुःख सं बंधतें रहित ॥ स्व प्रभ कहीये अनुभव का स्वभाव ॥ द्वैत वर्जित कहीये निरस्त समस्त द्वैत विभास ॥ इन विशेषणों करि विशिष्ट जो ब्रह्म ता मांहे सो मै हौं ॥ इस शब्द अनुविद्ध जो है सो शब्दानुविध सविकल्प कसमाधि कहीयत है ॥ २५ ॥ इस प्र

46 कारयत्ताते क्रमकरके समाधिहै
रूपसपदार्थसिद्धसंतैस्वतः होताजो
सनिर्विकल्पकेसमाधिहैरतैसकोउप
देशाकरतेहैं॥ ॥ स्वानुभूतिरसा
वेशाद्दृश्यशब्दावुपेक्ष्यतु निर्विक
ल्पः समाधिःस्यान्निवीतस्थ ल
हीपवत्॥ २६॥ टी०॥ स्वानुभूतक
हीयेसच्चिदानंदानुभवसोईमयार
सरसकहीयेपर्मानंद॥ (रस्तोवैसः) इ
तिश्रुतितैं॥ रतैसर्वविषयचितकीतदाका
रताकोकासारादिवृत्तिमानजोदृश्यरूप

मनहै॥ अपूर्वश्लोक रविषे कहा असमी
रत्तिजो हृ रहै तिन दोनों को उपेक्षाकर
को॥ अथवा यह पूर्व अभ्यास ते उद्भूत जो यह
दोनों है तिन्हों को अनादर करके निर
र्वांत स्थान रविषे रस्थित जो दीपक है
तिसकी न्याई जो चित्त का स्थिरी भाव है
सो निर्विकल्पक समाधि है। इस प्रका
र अन्वय है। अथवा पूर्वोक्त जो दृश्यं श अर
र्थ है तिन दोनों को अनादर करके पुनः
स्वानुभूत रसावेश ते जो चित्त का उत्कल
करा स्थिरी भाव है सो निर्विकल्पक समा
धि है।

इसप्रकारसेंबंधकरणा॥२६॥
अबइसीहीसमाधित्रयकोबाह्य
लेअनन्तरसेंसिद्धकरतेहैं। श्लो०॥
हृदीवबाह्यदेशेपियस्मिन्कस्मिं
श्चवस्तुनि समाधिराद्यःसन्मा
त्रेनामरूपपृथक्कृतिः २७ टी०
हृदेकीन्याईबाह्यदेशविषैभीजोकछु
सूर्यादिवस्तुहैतिसविषैजोअव्यभि
चरितस्वरूपहैतिसविषैजोचैतन्यका
स्फुरीभावहैसोआद्यदृश्यानुविद्ध
सविकल्पकानामसमाधिहै॥कैसी

हैएहसमाधिजोनामरूपात्मकोंग्राके
परित्यागतेंसन्मात्रविषेस्थितहै॥ २७
अबष्ठाप्दानुविद्धजोदूसरीसर्विकल्पक
समाधिहैतिसकोकहतेहै॥ प॰॥ अ
खंडैकरसंवस्तुसच्चिदानंदल
क्षणं इत्यविछिन्नचिंतेयंसमा
धिर्मध्यमोभवेत् २८॥ टी॰
अखंडैकरससच्चिदानंदलक्षणा
वस्तुरूपहै॥ इसप्रकारनिरंतरजो
चिंतवनाहैसोशुष्ठानुविद्धसर्विकल्प
कमध्यसमाधिहै॥ २८॥ इहांनिर्वि
कल्पकसमाधिकोकहतेहै॥ श्लो॰॥

५२

48

स्तत्र नावोरसास्वादात्तृतीयःपूर्व
वन्मतः एतैःसमाधिभिःषड्भि
र्नयेत्कालंनिरंतरम् २८॥१२॥
पूर्ववत्स्वानुभूतरसास्वादनतेंजोचि
त्तकास्थिरीभावहैसोयहतृतीयबाह्या
धाररनेर्निर्विकल्पकसमाधिहै॥एहजो
षोसाधारनरहहैंस्माधारकरचित
वद्ससमाधिहैंरतेंन्कोकरनेरंतर
कालकोव्यतीतकरे॥न्नर्थयहदूनष
ट्सामाधीविषेकेसीएककोन्म्रत्रवे
रूपकर्ताहूयाकरूणमात्रहंरतेनरवेना
नेरहो॥२८॥

कहीजोसमाधिकंतंव्यताहैतिसकी
अवधिकोजरणावतेहैयेउक्तसमाधी
केपरस्परसैकतेप्राश्चजोअयत्नतेतास
माधिहैतिसकोकहतेहैं॥श्लोकः॥दे
हाभिमानेगलितेविज्ञातेपरमात्म
नि यत्रयत्रमनोयातितत्रतत्र
समाधयः॥२०॥टी०॥सच्चिदानं
दअद्वैतब्रह्मगोचरस्यपरमात्मासाक्षात्का
रकाविषयकीयेसंतै॥मनुष्यहंमेब्राह्म
णहंइत्यादिजोप्राचीनदेहाध्यासका
भिमानहैतिससर्पविमुक्तकंचुकवत्तेहर
है

संप्रज्ञात समाधि कहते हैं ॥ अथ असंप्र॑
ज्ञात समाधिका लक्षण कहते हैं ॥ जिस
समाधि में त्रिपुटी का भान न हो और
त्रिपुटी का भान होने से उत्थान होता है
तैसे यह असंप्रज्ञात समाधि का फल
है ॥ जिस समाधिसें असंप्रज्ञात समाधि
लाभ होता है ॥ परंतु ईश्वरमें भक्ति
करके जो ईश्वरविषयक
वृत्तिका उदय होता है ॥ श्लोकः ॥ निर्वाणेह्
दयग्रंथिश्छिद्यंते सर्वसंशयाः

त्तीयंतेचास्यकर्म्माणितस्मिन्दृष्टे
परावरे ॥२॥ टी०॥ अहंकाराख्या
जो हृदे ग्रंथी है सो टूट जाती है॥ तिसदृ
ष्टे संसै तन्मूलक तदाधारक जो सं
पूर्ण आत्मविषयक संशय है ते न
ष्ट होजाते हैं॥ जे कहे एकवेर नष्ट सं
स्ते कर्मों के वश ते फेर उत्पन्न होवेंगे॥
एह शंका नहीं करणीय यह कहते है॥
इस आत्मज्ञ के पुन्यपापलक्षणा सर्व संचित
कर्म क्षय होजाते है॥ अर्थ यह फलपर्यंत

रजन्मके देखनेते पूर्वे ही नष्ट होजाते हैं

स्य कार्यकोन उत्पन्न करके ही नष्ट हो

जाते हैं॥ चकारएह जनावता है जो सा

नावस्था विषे प्रमाद करके कीये हुये जो

कर्म हैं सो भी नहीं स्त्रुष्ठाको प्राप्त होते

॥ अरु प्रारब्ध फल जो कर्म हैं तिन्हों

का भोग करके ही नाश है एह देखने

योग्य है॥ एह संपूर्ण कहा होता है॥

इतने अपेहार विषे कहते हैं॥ तरस्मि

न्निति॥ परावर कहीये ब्रह्मादि मनु

ष्यादि रूप सर्वोत्तम ब्रह्म तिसद्वैष्टं

कहीये साक्षात्कार करते सै तिन्नाचार्य एह स्त्र

वं च विलापन कृं रा प्रत्यगेक रससमा
व केस्योपायोसंरति॥ ३१॥ इसप्रकार स्मा
रति ते आरंभ कर के तत्त्वं पदार्थ के शो
धन पूर्वक महावाक्य का अर्थरूप जो
तत्त्वज्ञान है सा साक्षात्कार पर्यंत सो ससा
धन और सफल उपदेश को या तिस क
र के संपूर्ण शास्त्रार्थ समाप्त भया॥ त
हां प्रत्यग और ब्रह्म का एकत्व वाक्यार्थ है
एह जो उपदिष्ट है तिस विषे स्थूल सुक्षो
पाधि विशिष्ट जो जीव है॥ तिस के सूक्ष्म
स्थूलोपाधिकृत जो संबंध है तिस संब

५१

धकेरनेरात्समांईसाक्षीकेअग्रख्व
बेस्थूलसहितभासताजोलिंगदेहहै
सोचिदाभासकेसमावेशतेव्यावहा
रिकजीवहोताहै॥इसलिंगशरीर
केजीवत्वअध्यासतेहैसोजीवत्वसा
क्षीविवेकभासताहै॥येजोपूर्वसं
क्षेपकरकेजनायाहै॥तिसकेविस्ता
रकरताताईशेषप्रकरणकाआरंभ
होताहै॥ ॥अवछिन्नश्चिदाभासस्तृ
तीयःस्वप्नकल्पितः विज्ञेयस्त्रि
विधोजीवस्तत्राद्यःपारमार्थिकः

ग्रं भा०ली० स्र०

॥ टी० ॥ घटाकाशआदिकोकीन्याई
आत्मादि संघातकसंबंध विछिन्नजोचे
तस्वरूपप्रत्यगात्माहैसोअवछिन्ननाम
प्रथमविधजीवहै॥ जलाविषेसूर्यादिप्र
तिबिंबवत् अंतःकर्णउपाधिविषजोचित
प्रतिबिंबउपाधिधर्मोंसेदुलायमान
हैसोचिदाभासनामदूसरापरविधजीव
है॥ देवमनुष्यइसप्रकारस्वप्नवि
षेदेहसेस्थूलसंघातकादृष्टमेंदकसे
कल्पितजोजीवहैसोस्वप्नकल्पितनाम
तीसराजीवहै॥ जोवोहइसप्रकारप्रका

52 श्मान जो चिदात्मा है सो त्रिविधज्ञेय है ॥ तिनतीनों में आभास वहि नजो जीव है सो पारमार्थिकज्ञेय है ॥ इसप्र कार अध्यय करत्ता ॥ ३२ ॥ कैसे अव च्छिन्न जीव के पारमार्थिकत्व है इसते चे प्रायाह ॥ मूल ॥ अवच्छेदः कल्पितः स्यादवच्छेद्यं तु वास्तवम् ॥ तस्मिन् जीवत्वमारोपाद्ब्रह्मत्वं तु स्वभा वतः ॥ ३३ ॥ टीका ॥ अवच्छेद कल्पित है अवच्छेद कहिये बुद्धि आदि संघात तिसे आत्मा की इयत्ता ॥ आरम्भ अवच्छेद्य वास्तव अवच्छेद का विषय आत्मा

सूक्ष्मरीति ॥

अवछेदत्वरूप

है॥ तिस वास्तवरूप विषे आत्मा विषे जीवत्व अध्या
सते है॥ अरु असत्व स्वभाव ते है इति॥ टी०॥
ननु निरवयव महद्भूतं चित्धातु आत्मा के
आत्मादिकों कसे जो अवछेद है सो किं ना
म है॥ कहत संभार दि जो सावयव रूप हो है
तिन के मूल दे ग्रा विषे जैसे भूविवर कर
अवछेद है अरु आकाश विषे वंगपाली आदि
कसे जैसे अवछेद है॥ सि०॥ चित्धात आत्मा
विषे निरवैयवत्व हेतु तें ऐसे अवछेद न
ही॥ भला जो जैसे सर्प करली ल्या जो मांडू
क है तिस विषे जो से सर्प कसे अवछेद है

तद्वत प्राणादि संघात कैसे आत्मा अवछे
द का विषय होइगा ॥ सि ॥ पूर्णत्व हेतु
कैसे नहीं ॥ तहां श्रुति है निष्क
लं निःक्रियं शांतं पूर्णमदः पूर्ण
मिदमिति ॥ निरवेयव है निःक्रिय है
शांत है पूर्ण है एह पूर्ण है एह ॥ भला जी
महावत जैसे स्वेच्छानुकूल भाव
से हस्ती अवछेद का विषय कीता है
तद्वत प्राणादि कों आत्मा अवछेद
होइगा ॥ सि ॥ प्राणादिक जड के चेत
न परतंत्र भाव से वे परता है ॥ तहां श्रु
= श्रुर्यत प्राणादि चितात्मा के
अधीन हैं ॥ अरु हस्ती महावत

=प्रेरणाकरताहै

निप्रकाणहै (यः प्राणमंतरोयमयति
यः सर्वाणि भूतान्यंतरोयमयती
ति ।। सोकिसप्रकारअवछेदताहै तहां
कहतेहैं ।। मृदादिकारणविषेजैसे घटादि
कार्यकरअवछेदहै ।। तद्वत प्राणादिकरि
आत्माकेअवछेदताकथनहोई हांप्रकारां
तरअवछेदकेपर्यायकथनहीं ।। ताते
चिदात्माकेअवछेदकल्पितहै ।। ननु जो
ससंरनैउपाधिअवछेदनजोचिदात्माहे
सोजीवहैएहजोलोकविषेव्यवहारहै अ
भासताहैसोकिसप्रकारहै ।। रस्पे ।।
=अर्थयहमृदादिकारणविषे
बेजोघटकार्यके अवछेद

१६ जीव है अन्यथा नहीं।

परिछिन्नजो

उपाधि है तिसबिना चिदात्मा के पृथक् भिन्नत्वकरके विशेषस्वरूप नहीं पाया जाता इसीहेतु ते अहं कहते हैं। जैसे स्वरूप से राहु सत है चंद्रादित्यमंडलों के संग बिना प्रत्यक्ष नहीं पाईता। तद्वत् आत्मा के भी अहंकारोपाधि बिना जीवत्व व्यवहार नहीं फुरता। इसतें विशेषाकार जीवत्व भास के परिछिन्नरूप उपाधि के अधीनत्व है। इसीतें उपाधि अवछिन्न जो चिदात्मा है सो जीव है इसप्रकार व्यवहार और भास दोनों रसे सिद्ध भये

आंत: करणा की उपाधि युक्त चिदात्मा को

६

इहसंपूर्णासमंजसहै॥ननुअवछेद

अरअवछेकेकैसेनेरूपणायजोअ

वछेदहैतिसकेकल्पितत्वसंतिअव

छेदअरअवछेकेकल्पितहोय॥ऐसे

संतिकिसीएककेपर्मार्थसत्वकेनरसिद्ध

होवणातेशून्यमताप्ती होतीहै॥इस॥

अवछेदंजुवास्तवंइनकरउतरकहतेहैं

॥अवछेदकजोप्राणायुपाधिहैतिन

केअवास्तवत्वनेंतत्कनजोअवछेद

हैसोअवास्तवहै॥अरअवछेदजो

आत्मतत्वहैसोअवास्तवनहीं॥जैसे

55 सर्वचर्मिभरणं सर्वस्याः संवेतन संरेति अहिकृत चर्मवेष्टनके संतोहू ति सम संवेष्टन चर्मस्य वास्तवनहीं।। इसीतें अवैद्य घपर्मोर्थरूपहै।। इसीतें जो रसहै तिसकोकहते हुये समाप्त करते हैं।। तरस्मिन इसउत्तरार्धमें सारत्ति न स्वि सात्मा रविषेजीवत्व परहै छेदको पाइ अस्विवेकोभ्रम मत्ते हो। नहीं प्रमाण का स्वभावतें पूर्णत्वहीहै नहीं वस्तु रधिन्नत्व नहीं जीवत्व।। ३३।। तहां अ घपारमार्थिकहै इसविषे कहाजो

खिन्नो बहै तिस विशेष प्रयोजन को कह
ते हैं ॥ ... ॥ अवच्छिन्नस्य जीवस्य ।
तारा त्म्यं ब्रह्मणा सह तत्वमस्यादि
वाक्यानि जगुर्नतर जीवयोः ३४
॥ टी० ॥ तत्वमस्यादि जो वाक्य है सो तत्वं पद
दोंकर के उपाधि अवच्छिन्न जो जीव है तिस
सको कहि कर कोतिस अवच्छेदक अव
च्छेद अवछेद कर विशेषण को त्याग द्वारा ल
क्षणा से तत्पद लक्षनो ब्रह्म है तिस सा
थ तादात्म्य को कहते हैं अर्थ यह ब्रह्म एकत्व
भाव को कहते हैं ॥ रचि तमो लक्ष्म अस्त्व पूर्वक

56 ल्पित जो द्वैजीव हैं तिन्हों के नाश सूं ब्रह्म कों नहीं कहत जातें तिन्हों को स्वरूप तें ही कल्पितत्व करके मिथ्यात्व है॥ ३७॥ कैसे तिन दोनों को मिथ्यात्व है इस अपेक्षा विषे तिस कों स्पष्ट करके दिखावते हैं॥ ३८॥ ब्रह्मरूप वस्तु विषे नाम माया विक्षेपावृति रूपिका आवृत्या खंडतां तस्मिन् जगज्जीवौ प्रकल्पयेत्॥ ३९॥ विक्षेप अरु आवर्ण शक्ति करके निरूप्यमाण जो माया सो सत्य ब्रह्म विषे स्थित है॥ सो ब्रह्म विषे स्वाभाव की अखंडता को आच्छादन करके जगत अरु जीव दोनों

२

कोकल्पेहें॥ अर्थयहएहभोक्ताहैएहभो
ग्यहैइसप्रकारअज्ञानेकरविधभेदकोक
ल्पेहे॥३५॥तहांकोनजीवहेअरकोनज
गतहैइनअपेक्षारविवेककहतेहैं॥श्लो॰
॥जीवोधीस्थचिदाभासोजगत्स्या
द्भौतिकम्॥ अनादिकालमा
रभ्यमोक्षात्सर्वमिदंद्वयम्॥३६॥
टी॰॥अरविद्यासेकल्पेनबुद्धिवि
षेप्रतिबिंबितजोचिदाभासहैसोजी
वहे॥यद्यपिवस्तुतेंबिंबअरप्रतिबिं
बकेभेदनहीं॥तथापिउपाधिस्वभा
वकरकेजोभेदहैतिसकरकेप्रतिबिंबके

57 असत्व है॥ सो अध्यास न तौ ब्रिंब का धर्म
है न उपाधि का धर्म है न दोनों का धर्म
है न स्वतंत्र है इह बडु तस्यानो विषेनि
रूपीन है॥ अरु आकाशादि भूत रूप अ
र देवता तिर्यग मनुष्य रूप भौतिक सो ए
ह भूत भौतिक जगत् है॥ तात्पर्य यह भू
त भौतिक लक्षण जगत् जो भोग्य रूप है
अरु बुद्धि स्थ जो चेतनाभास रूप भो
क्ता है सो एह दोनों रचे हए आत्मा अरु बंड
ब्रह्म स्व विषे अविद्या करके विजं भेत हैं
॥ ननु इन दोनों के अविद्या करके कल्पि
तत्व सर्व ते भुक्ति रजतादिकों की न्याई

कहा स्वित बाधपायाजावे जातै बाधन

हीपायाजाता नाते मायाकल्पितत्वन

हो॥ रसि०॥ हेवादी जीवब्रह्मजगततो

दोनोंहैं सो अनादि है कालको आरंभ

करके अविद्यानिवृत्तिरूप जो मोक्ष है

सो तिसतें पूर्वही वर्त्ततेहैं॥ ऐसे संते

जौलों अधिष्ठानका साक्षात्कार नही

उदै होता तौलों प्रबोधकै बिना स्वप्न

की न्याईं नेही बाधकार वेकोई ...॥ ये जाते।

रहा॥ ननु जे एह दोनों आनादि अनंत

सो रूपपर्यंत रहस्ये तनदमुख्यत्व लयत्र

58 निपादकजोश्रुतिस्मृतिवाक्यहैंतिन
कीकौनगतिहैअरप्रत्यक्षप्रमाणकै
सेजगतश्रुतिकेसिद्धसंतिकै
सेअनादिअनंतहैवहहैनो॥सि०॥
श्लो०॥चिदाभासस्थितानिद्राविक्षे
पावृतिरूपिणी आवृत्यजीवजगती
पूर्वंनित्तेनकल्पयेत् ३७॥टी०
खबचिदाभासजोजीवहैतिसविषेपाव
रोरूपास्थितजोअविद्याहैसोबंध
अरप्रलयकेपूर्वजीवअरजगतको
आपमेअधीनकरकेफेरप्रबोधअ

रूपकरिकालखिबेनूतनरूपकरके

कल्पैहै॥अर्थदहवुनःजीवजगत्

व्यवहारकोप्रवत्तिकरावैहै॥अवि

द्याकरकेकल्पितचिदाभासकेअविद्या

अध्यासयोगतें(अहंअज्ञः)ऐसेअवि

द्याकारतिसचिदाभासविषेस्फुटत

रभासताअवेईकरकेचिदाभास

विषेनिद्रास्थितहैऐसेदेखनायो

ग्यहै॥अथवायहतात्पर्यहैपूर्वश्लो

कविषेचिदाभासजोजीवहैअरतिसे

यजोभूतभौतिकरूपजगत्है॥अथत

59

रि कए हद्दोनों स चिदानंद अरु चेतं
न्यरविषेस्थित जो अनादि अविद्या है ति
नकै मोक्ष पर्यंत रविदि दृहै एह प्रती
पादित है॥ अरु इन दोनोंको विषे एह प्रती
पादित है जो चिदाभास रविषे स्थित है
तिन तु इस वाक्य के अभाव रोषि प्रधान
प्रत्यक अविद्या कही॥ तिस के स्व
प्रकल्पित जो जीव है अरु तत्रो प्य जो
जगत है एह दोनो प्रतिभास कहे॥ ६०
कहा होया जो इन दोनों का प्रतिभा
सिकत्व है सो रके स प्रकार है इन दोनों

जीव भी सत्य है
जगत भी सत्य है
दोनों मिथ्या है

प्रतीतकालखिषेहीभासतेहैं

वेद्धाखिषकहतेहैं॥ ॥प्रतीति
कालएवैतेस्थितत्वात्सातिभासिके
नाहिस्वप्नप्रबुद्धस्यपुनःस्वप्नेस्थि
तिस्तयोः ३०॥टी०॥एहपूर्वको
जोजागतत्रअरजोवहहैसोप्रतिभासिक
हैंकाहतेजोपूर्वोतरकालखिबनही
भासते॥अबदृष्टांतकहतेजोप्रतीति
कालमात्रभासतहैतिसकोअनु
भवोक्तकरकेदृढकरतेहैं॥स्वप्न
तेप्रबुद्धजोपुरुषहैअर्थादिहस्व
प्नांतरकोप्राप्तजोपुरुषहैतिसके
पूर्वदृष्टजोवहहोतोहैतिनकोजाग

तविषे अरु पुनः स्वप्न की प्राप्ति विषे
स्थित न ही होती ॥ तथा दृष्टि हीं है ॥ भा
व यह स्वप्न विषे जो दृष्ट है तिस के
अवस्थांतर विषे अरु स्वप्नांतर वि
षे भास्यता के अभाव तें अरु प्रतिभा
स काल विषे हीं भासता तें प्रतिभा
सकत्व सिद्ध है ॥ ३८ ॥ इस प्रकार
जीव त्रय को दिखाय कर तिन तीनों
विषें चिदाभास अरु स्वप्न कल्पित
हैं तिन्हों की उत्पत्ति का कारण जो अ
नादि अज्ञान है ... तत जो कार्य कार
ण अवस्था है है तिन को दिखाय कर

अबत्तिनत्तीनजीवोंकाजोपरस्परभेद
हेतिसकोअनुभवप्रमाणकरकेदि
खावतेहैं॥तीनप्रकारकेप्रातीक॥
प्रातिभासिकजीवस्तुजगत्तत्प्रा
तिभासिकम्‌ वास्तवंमन्यतेय
स्तुमिथ्येतिव्यावहारिकः २४
॥टी०॥उक्तविविककल्पितजोरज्ज
तहैतद्वत्स्वप्नकल्पितप्रातिभासिक
जगतकोजोजीववास्तवरूपसेंअधि
कमानताहेसोप्रातिभासिकजीवहै॥
अरजोजीवपूर्वोक्तजगत्‌कोमिथ्या
मानताहेसोव्यावहारिकजीवहै॥२४॥

61। इसप्रकारप्रातिभासिकजीवतेंव्याव
हारिकजीवकेभेदकोकरिकरके
अबतिसव्यावहारिकजीवतेंपारमा
र्थिकजीवकेभेदकोकहतेहैं॥मू॰
॥व्यावहारिकजीवस्तुजगत्त्रव्या
वहारिकम् सत्संप्रत्येति मिथ्येति
मन्यते पारमार्थिकः॥४०॥टी॰
जाग्रतदशाविषेप्राप्तिअसंवादी
भावकरिमान्याहोयाजोजगतहैति
सकोजोसत्यजानताहै अर्थयहत्रि
कालाबाध्यजानताहैसोव्यावहारि
कजीवहै औरजोइसजगतकोरमे

ध्याजाननाहैसोपर्मार्थिकजीवहै

॥५०॥अब पार्मार्थिकजीवका व्याव

हारिकजीवतें भेदकहतहैं येतिसके

अहैं ब्रह्मसाथ एकयोग्यत्व कोज

रंगावतेहैं॥ ५१॥ पारमार्थिकजी

वसुब्रह्मके पारमार्थिकस्व प्रतें

तिवीहतें नानवीहनें त्वन्नजा

नना भरी गब्रह्म हीएकपार्मा

र्थिकहैब्रह्मतें और कछुनहीं इस

प्रकारजोदेखनाहैसोपार्मार्थिक

जीवहै।जेकरचित्तपदरिष्ठिनाका

रजगतदेखताहैतोभीरमिथ्यात्व

62 सैदेखवता है॥ पूर्व कहे जो च्चेया भा
सक्षर स्वप्न कल्पेत है तिन की न्या
ई ख विषय को पर्मार्थ रूप न है रे
खता इत्यर्थः॥ भाव यह जौ लों उप
देश ग्रंथ तें अर शास्त्र तें अर अनुमान
तें उपा अरु दृश्य रूप के रविवेक ज्ञान
को नहि लभता तौ लें संघात ही कों
उपा अरु तन दृश्य रूप विषय को प
र्मार्थ मानता है एह लोक सो ऐसे
मानता जो जीव है सो खिवेक ज्ञान
वानों ने प्राप्त भया है सो क कहीयत है
॥ अरु जो पकर खिवेक दृष्टि तें संघा

उपदेश ग्रंथ अरु

तातें अरु रहेउ स्यां अरदृश्य जगत तौन
हौ पारमार्थिक किंतु व्यापक कार
ण आत्मा विषे आविर भाव तिरो
भावों से विकार है ऐसे जगत् को
जो अविसं वादत्ते परमार्थमानता है
सो पारमार्थिक दृष्टियों ने व्यावहारिक
जीव कहावत है। अरु जो वि्यान्य
यको अनुभव पर्यंत धार करन
हौ कार्यकारण भाव पारमार्थिक
किंतु आकाश विषे नल मलिनत्वा
दिकों की न्याई पूर्ण प्रत्यगात्मा

63

स्मरवेषु अंश मात्र हैं कैसे मानता है
सोऽग्नास्त्र तत्त्ववेता ऊनें पार्मार्थि
कत्रैसे कथ्यते है ॥ ४१ ॥ ननु हे स्सि
धांर्तेन व्यावहारिक अर्थात् स्मार
स्सि के जो जीव हैं ते ज्ञो कैं चैतन्य भ्या वे ह्या
मासें कल्पीत तत्त्वसंतैज उत्वैरके स्यप्रका
स्वी वस्व हे ॥ जीव जो है चैतन्यात्मा ही व
स्सिद्ध है तहां श्रुति भी है ॥ अनेन जीवेना
त्मनानुप्रविश्य नामरूपे व्याकरवाणी
ति ॥ अर्थ यह इन जीवरूप करि सें प्रवेश
होइ करके मैं नाम रूपों को प्रगट करूं

इति॥ रसआगांकाको दृष्टांतकरनि
राकरणा तोइ दृष्टांतकहते हैं॥ ५०॥
माधुर्य्यद्रवत्वौस्नादि जलधर्मानि
रंगके अनुगम्यापितन्निष्ठके।
नैव्यनुगमनायथा॥ ५१॥ टी०॥ जैं
से माधुर्य्यद्रवत्वौस्नादिकस्वाभा
विकजलधर्मनिरंगविषैपाइते
हैं अरु तन्निष्ठजो फेन है तिनवि
षैपाइते हैं इति दृष्टांतार्थः॥
अब दार्ष्टांत कहते हैं॥ श्लोकः॥
सात्विस्याः सच्चिदानंदाः संबद्धा
व्यावहारिके नद्वारेणानुगच्छंति
नपेव प्रातिभासिके ॥ ५२॥ टी०॥

64 साक्षीविषेस्थितजोसच्चिदानंदहै
साक्षीकहीयेप्रत्यगात्मब्रह्मअरुतिस
केस्वभावरूपेंहीहैसच्चिदानंदसर्व
मोविभक्तिकरकेकथनजोआधाराधे
यभाव है सोकल्पनामात्रहै॥व्याव
हारिकेकहीयेव्यावहारिकजीवविषे
तेइसच्चिदानंदप्राप्तिहोतेहैं॥व्यावहा
रिककहीयेलिंगोपाधिकोआश्रय
करकेइसलोकअरुपरलोकविषे
गमनागमनजोव्यवहारहैतिसकरके
कल्पितहोइ॥जलकेतरंगकीन्याईं

स्वितत्स्वरूपपर्मात्मा के व्यवहार के जीव
रूपबल ने तैं रत्ति स परमात्मा तजो स
स्वेच्छा ने रहै सो तिस विषे बलते है ॥ व्या
वहारिक जीव द्वारा प्राप्ति भास्सि के जी
व विषे हू प्राप्ति होते हैं ॥ कार्य यह लिं
ग द्वारा ही स्थूलोपाधि विषे आत्म
भाव है ॥ इसी तें कोह जैसे अस्मिम
च्यमान जो प्राप्ति भास्से के जीव है तैं
स विषे हू फेन स्विष गूल्मा र है धर्म
कीन्यो इसि स्वेच्छा ने प्राप्ति होते हैं

65 ॥६४॥ इसप्रकारस्यात्मधर्मीकिअध्या
रोपकोरखिध्यकरकेअबअपवादप्र
कारकोकहतेहैं॥श्री॥ प्रातिभासि
कजीवसाक्षयेस्तुकीवहग्रि
के। तद्वयेसच्चिदानंदःप
र्य्यीवस्यंतिसाक्षीलि ॥६५॥
टी०॥सुर्वेतअरमोहविषेकमक
रकेलीयमानजोप्रातिभासिकअ
रव्यावहारिकजीवहैंतिन्होविषे
जोसच्चिदानंदहैसोसाक्षीबुद्धि

सेकस्यैतत्स्त्यगत्रलखिषेपर्यवसा
नकोप्राप्तहोतेहैं॥जैसेकेनश्चरत्त
रंगकेलयसंतैतत्सत्तजोगुणादिक
हैंतेसमुद्रविषेहीपर्यवसानकोप्राप्त
होतेहैंस्त्र्यन्यच॥५४॥इतिश्रीमत्शं
कराचार्यविरचितावाक्यसुधाटी
कासमाप्ता॥लिखितं श्रेहव्रहीएकादगी
रमितीचेत्रवदी१० संवत१८८४ पठनार्थ
आत्मंप्रसिद्धमयी,दे रेलमेरविचे,इत्ती॥
दासमृतेकोवेस्ता।

